विश्वकर्मा पूजा विशेषांक

25/-₹

हिन्दी साप्ताहिक

विश्वकर्मा किरण

वर्ष-18 अंक-36 जौनपुर 28 सितम्बर, 2017 http://www.vishwakarmakiran.com

Wisdom Way Progressive Inter College

Matiyari Crossing, Faizabad Road, Chinhat, Lucknow

(Affiliated with U.P. Board, Allahabad)

&

New Wisdom Way Progressive Inter College

Eldeco Tiraha, Malhour Road, Chinhat, Lucknow

(Affiliated with U.P. Board, Allahabad)

Rakesh Vishwakarma

Manager

Contact- 09415109193

विश्वकर्मा पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं

विश्वकर्मा पांचाल ब्राह्मण सभा

मकबूलगंज, लखनऊ

संजय विश्वकर्मा
महामन्त्री
मो0: 09415027569

विश्वकर्मा पांचाल ब्राह्मण सभा, मकबूलगंज, लखनऊ द्वारा संचालित विराट विश्वकर्मा मन्दिर का जीर्णोद्धार कराया जा रहा है। यथासंभव दान देने का कष्ट करें।

अखिलेश मोहन
अध्यक्ष
मो0: 09415015551

गनेश प्रसाद विश्वकर्मा, राम कुमार विश्वकर्मा, रामकृष्ण विश्वकर्मा, उदय चन्द्र विश्वकर्मा, रामकृष्ण विश्वकर्मा, वीरेन्द्र कुमार विश्वकर्मा, हरिनारायण विश्वकर्मा, अरूण विश्वकर्मा, हरिओम विश्वकर्मा, मनोज शर्मा, हरिश्चन्द विश्वकर्मा, अशोक शर्मा

विश्वकर्मा पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं

विश्वकर्मा विकास एवं सुरक्षा समिति

मुख्य कार्यालय-
बी-73/3, अम्बिका विहार (शिव विहार)
करावल नगर, दिल्ली-110094

होरीलाल शर्मा
राष्ट्रीय अध्यक्ष
मो0: 09810320739

आशुतोष विश्वकर्मा
संस्थापक
मो0: 09911582931

विश्वकर्मा पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं

प्रभुनाथ विश्वकर्मा

उद्यमी एवं समाजसेवी
श्री श्याम ट्रेडिंग कम्पनी
(पुलिस चौकी के सामने)
मालवीय रोड, देवरिया
मो0: 09696949400

विश्वकर्मा पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं

राजेश विश्वकर्मा

एडवोकेट
उच्च न्यायालय, इलाहाबाद
मो0: 09415604840

विश्वकर्मा पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं

प्रेमधनी विश्वकर्मा

डाइरेक्टर
रिच इण्टरनेशनल म्यूजिक, मुम्बई
मो0: 09323004818

विश्वकर्मा पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं

वेद प्रकाश शर्मा

आर0पी0एफ0, दिल्ली
मो0: 08010111854

विश्वकर्मा पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं

राम प्रकाश विश्वकर्मा

मन्त्री-खादी कमीशन कर्मचारी यूनियन
राज्य कार्यालय-
फैजाबाद रोड, इन्दिरानगर, लखनऊ
मो0: 09415580690

विश्वकर्मा पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं

श्याम जी विश्वकर्मा

जिला अध्यक्ष
समाजवादी पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ, संतकबीरनगर
प्रदेश सचिव
अ0भा0 विश्वकर्मा शिल्पकार महासभा, उ0प्र0
मो0: 09454003721

विश्वकर्मा पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं

इं0 विजेश शर्मा

राष्ट्रीय सचिव-
अ0भा0 विश्वकर्मा शिल्पकार महासभा
प्रदेश सचिव-
समाजवादी पिछड़ा वर्ग प्रकोष्ठ, उ0प्र0
मो0: 09897627217

विश्वकर्मा पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं

इं0 आशीष विश्वकर्मा

उप खण्ड अधिकारी (लेसा)
उत्तर प्रदेश पावर कार्पोरेशन लिमिटेड
रेजीडेन्सी, लखनऊ
मो0: 08736907929

विश्वकर्मा पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं

अंकुश राज विश्वकर्मा

युवा भाजपा नेता, लखनऊ
मो0: 09415133377

विश्वकर्मा पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं

सुनील पांचाल

राष्ट्रीय सचिव एवं प्रभारी
अखिल भारतीय
विश्वकर्मा पांचाल महासभा, उ0प्र0
मो0: 09811636528

विश्वकर्मा पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं

अमरनाथ विश्वकर्मा

थाना प्रभारी
थाना- गोसाईगंज, सुल्तानपुर
मो0: 09451378282

विश्वकर्मा पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं

राममूर्ति विश्वकर्मा

कान्सटेबल
उत्तर प्रदेश पुलिस, फैजाबाद
मो0: 09452252377

विश्वकर्मा पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं

चिराग जांगिड़ खूड़

युवा नेता एवं समाजसेवी

निवासी- खूड़, सीकर (राजस्थान)

हाल निवास- न्यूजीलैण्ड

मो0: +64223618724

विश्वकर्मा पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं

रमाकान्त विश्वकर्मा

राष्ट्रीय सह महासचिव एवं कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष

अखिल भारतीय विश्वकर्मा महासभा, उ0प्र0

मो0: 09415423385, 09336853175

विश्वकर्मा पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं

अच्छेलाल विश्वकर्मा

प्रदेश अध्यक्ष

अ0भा0 विश्वकर्मा शिल्पकार महासभा

मो0: 09415397714

विश्वकर्मा पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं

विशोक विश्वकर्मा

पूर्वांचल प्रभारी

राष्ट्रवादी जनशक्ति पार्टी

उत्तर प्रदेश

मो0: 07977372034

विश्वकर्मा पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं

रामधनी विश्वकर्मा

नेता, भारतीय जनता पार्टी

37-38, बसंत इन्क्लेव, तकरोही, लखनऊ

मो0: 09336627773

विश्वकर्मा पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं

राम अरज विश्वकर्मा

प्रदेश सचिव

विश्वकर्मा महासभा, उ0प्र0

प्रो0- विश्वकर्मा फेब्रिकेटर्स

मो0: 09415541739

R.N.I. No.- UPHIN/2000/01157
विश्वकर्मा किरण
हिन्दी साप्ताहिक पत्रिका

वर्ष- 18 अंक- 36
जौनपुर, 28 सितम्बर, 2017
पृष्ठः 32 मूल्यः 25/- रूपया

प्रेरक
रघबीर सिंह जांगड़ा
मो0: 9416332222
*****
सम्पादक
कमलेश प्रताप विश्वकर्मा
मो0: 9454619328
*****
सह सम्पादक
विजय कुमार विश्वकर्मा
मो0: 8763834009
*****
समन्वय सम्पादक
शिवलाल सुथार
मो0: 8424846141
*****
जौनपुर ब्यूरो
संजय विश्वकर्मा
मो0: 9415273179

-:सम्पर्क एवं प्रसार कार्यालयः-
ई-1/351, विनयखण्ड, गोमतीनगर
लखनऊ। 226010

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक कमलेश प्रताप विश्वकर्मा द्वारा अजन्ता प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स, अहमद काम्प्लेक्स, गुईन रोड, अमीनाबाद, लखनऊ से मुद्रित एवं 98, नारायण निवास, नखास, सदर, जौनपुर से प्रकाशित।
सम्पादक- कमलेश प्रताप विश्वकर्मा

website: www.vishwakarmakiran.com
E-mail: news@vishwakarmakiran.com

-:मुख्य संरक्षकः-
विश्वकर्मा जागरूकता मिशन

कमलेश प्रताप विश्वकर्मा

सम्पादकीय...

'विश्वकर्मा' घर-घर के भगवान

भगवान विश्वकर्मा घर-घर के भगवान तो हैं परन्तु आमतौर पर अभी इसकी मान्यता नहीं है। विश्वकर्मावंशी के साथ ही अन्य लोग भी भगवान विश्वकर्मा की पूजा करते हैं सिर्फ एक दिन 17 सितम्बर को। भगवान विश्वकर्मा की पूजा प्रतिदिन हर घर में अन्य देवी-देवताओं की भांति होनी चाहिये। इसकी शुरूआत विश्वकर्मावंशियों को ही करनी होगी। अभी तक तो यही देखने को मिलता है कि सिर्फ 17 सितम्बर को ही धूमधाम से पूजा होती है, बाकी दिन सिर्फ लक्ष्मी-गणेश और अन्य देवी देवताओं की पूजा होती है। मैं नहीं कहता कि लक्ष्मी-गणेश या अन्य देवी-देवताओं की पूजा न हो, मगर भगवान विश्वकर्मा की पूजा भी तो होनी चाहिये। मुझे कहने में कोई संकोच नहीं कि विश्वकर्मावंशियों के ही तमाम ऐसे प्रतिष्ठान देखने को मिलते हैं जहां भगवान विश्वकर्मा की प्रतिमा तक नहीं होती, जबकि दूसरे देवी-देवताओं की प्रतिमा पूजा के मन्दिर में व दीवारों पर लगी होती है।

भगवान विश्वकर्मा सृष्टि के रचयिता हैं और सृष्टि के रचयिता की पूजा प्रतिदिन न हो यह आत्ममंथन करने वाली बहुत ही विचारणीय प्रश्न है। कण-कण में भगवान विश्वकर्मा, फिर भी यादों में सिर्फ एक दिन। मैं यह भी नहीं कहता कि सभी लोग सिर्फ एक दिन पूजा करते हैं परन्तु अधिकांश लोगों व परिवारों की हकीकत यही है। भगवान विश्वकर्मा की पूजा सिर्फ प्रतिष्ठानों में ही नहीं, सामान्य घरों में भी प्रतिदिन होनी चाहिये। क्यों न इसके लिये सामाजिक संगठनों द्वारा एक मुहिम चलाई जाय, लोगों को इसके लिये जागरूक किया जाय। इस मुहिम को धार्मिक स्वरूप दिया जाय। धार्मिक प्रवृत्ति एक ऐसी विधा है जहां सभी के सिर नतमस्तक होते हैं। इस मुहिम से भगवान विश्वकर्मा को लोगों के घरों व दिलों में स्थापित किया जाय तो इसका एक बड़ा सार्थक परिणाम विश्वकर्मावंशियों की एकता के रूप में दिखेगी।

17 सितम्बर को भगवान विश्वकर्मा का पूजनोत्सव होता है। पूजनोत्सव का मतलब यह नहीं कि पूजा उसी दिन हो। पूजा प्रतिदिन होनी चाहिये। 17 सितम्बर को तो सिर्फ उत्सव मनाया जाता है। प्रतिदिन पूजा करने में कोई दिक्कत भी नहीं है। अन्य देवी-देवताओं के साथ ही भगवान विश्वकर्मा की फोटो पूजा के मन्दिर में रखने की आवश्यकता मात्र है। आज भी ग्रामीण इलाकों में विश्वकर्मावंशियों के घरों में भी लक्ष्मी, गणेश, शंकर, हनुमान, दुर्गा आदि की फोटो तो मिलती है परन्तु भगवान विश्वकर्मा की फोटो नहीं। आवश्यकता इसी जागरूकता की है कि हर घर में भगवान विश्वकर्मा की फोटो होनी चाहिये। गौर करने वाली बात है कि देवी-देवता तो दूर की बात, अपना प्रचार करवा कर कुछ इंसान ही भगवान की जगह ले लिये और वह अपने अनुयायियों के दिल और घर में स्थापित हो गये। जब प्रचार मात्र से इंसान की पूजा हो सकती है 'विश्वकर्मा' तो भगवान हैं उनकी पूजा क्यों नहीं? जिस दिन से भगवान विश्वकर्मा की पूजा हर घर में होने लगेगी उसी दिन से विश्वकर्मावंशियों में एकता की लहरभी दिखाई पड़ने लगेगी।

भगवान विश्वकर्मा

विश्वकर्मा विभुं ब्रह्म वाचस्पति शिल्प रत्नाकरं विश्वनाथं प्रभुम्।

अभ्र-भू-व्यापकम मंगलं भास्वर सृष्टिकर्ता अजं आदि देवं भजे।।

सुन्दरं सुप्रियं शुभ्र रूपं शुभं दीनता नाशकं भक्त मोदम् प्रदम्।

श्री कलाधीश्वरं मेदनी धारकं नित्य नारायणम शिल्प देवं भजे।।

सृष्टि निर्माता आदि शिल्पाचार्य विज्ञान के जनक भगवान विश्वकर्मा का वर्णन विश्व के प्राचीनतम् धर्मग्रंथों तथा वेद-उपवेद, पुराण, महाभारत, रामायण आदि में ब्रह्मांड पिण्ड सृष्टि और समस्त विज्ञान संबंधित प्रकरणों में सर्वोत्तम रूप में वर्णित है। वेदादि भाष्य भूमिका में यजुर्वेद अध्याय 31 मंत्र 17 का भाष्य करते हुए महर्षि दयानंद सरस्वती ने विश्वकर्मा को निम्नलिखित रुप में वर्णित किया है-

विश्वं सर्वकर्म क्रियामाणमस्य सः विश्वकर्मा।

भगवान विश्वकर्मा को भीष्म ने महाभारत शांतिपर्व में निम्नलिखित शब्दों में याद किया है-

विश्वकर्मन् नमस्तेऽस्तु विश्वात्मन् विश्वसंभवः।

अपवर्गोऽसि भूतानां पञ्चानां परतः स्थितः।।

त्रेतायुग में समुद्र सेतु बंधन के समय गोस्वामी तुलसीदास जी लिखते हैं-

विश्वकर्मा के सुत गुण खानी,
जिन पर से परसलि उतरानी।

शिल्पकर्म जानहिं नल-नीला,
शिल्पाचार्य अमित बलशाली।।

यही नहीं, सेतु बंधन के बाद वर्णन मिलता है कि रामचंद्र जी नल-नील की पूजा किस प्रकार किए हैं-

पदम अठारह कपि कटक चल इनके भुज छांह।
निज कर सौरभ सुमन ले, रघुपति पूजिह बांह।।

इसी संदर्भ में शिल्प और विज्ञान के आदि देव भगवान विश्वकर्मा के मनु, मय, त्वष्टा, शिल्पी और दैवज्ञ नामों से विख्यात वंशजों का समाज के

हरेश्याम विश्वकर्मा, एडवोकेट

सहयोग में सर्वाधिक योगदान रहा है, और इनकी अपनी मौलिक सृजनात्मकता सदैव रही है। स्कंद पुराण (अ0-13) में वर्णन आता है कि-

मनुर्मयश्च त्वष्टास्च शिल्पी विश्वज्ञ एव च,
पंचे ते देव ऋषियाम विश्वकर्मा गुमुख दगवा।

अर्थात मनु, मय, त्वष्टा, शिल्पी और दैवज्ञ विश्वकर्मा के पांच मानस पुत्र क्रमशः लौह, काष्ठ, ताम्र, प्रस्तर, स्वर्ण आदि-आदि अलग-अलग विधाओं में निपुण होकर अधिष्ठाता देव के रूप में कर्म संचालन शुरू किए और वेदों-ऋचाओं का प्रतिपादन किया। इनके वंशीय, विश्वकर्मा वर्तमान में लोकनाम लौहकार, काष्ठकार, ताम्रकार, स्वर्णकार एवं शिल्पकार नामों से जाने जाते हैं। कहीं-कहीं यह वंशी रामगढ़िया, धीमान, पांचाल, जांगिड़

आदि नामों में संबोधित हैं। सृजनात्मक क्षमता के प्रत्यक्ष प्रतीक इस जीवन्त समुदाय ने सभी मानवीय मूल्यों को आज भी अक्षुण रखा है तथा उसे नए विकसित रूपों में अपनी नवीन खोज के द्वारा समाज के विकास में योगदान किया है।

परंतु यह समाज वर्तमान में वोट की राजनीति के कारण उपेक्षित है। कारण यह है कि इस समाज का पक्ष सदैव योग्यात्मक (क्वालिटेटिव) रहा है और संख्यात्मक दृष्टि से अन्य समुदाय की तुलना में विश्वकर्मा समुदाय की जनसंख्या अपेक्षाकृत कम रहने से हमेशा उपेक्षित रहा है। सांगठनिक क्षमता व सामाजिक एकता का अभाव भी राजनीतिक उपेक्षा का एक मौलिक कारण है। एक समय वह भी रहा है जब तक्षशिला विश्वविद्यालय में 18 शिल्पों की शिक्षा केवल विश्वकर्मावंशीय लोगों को ही दी जाती थी, जिसका सफल लौह स्तंभ जैसे अनेक कृतिमान आज भी देश-विदेश में पुरातात्विक धरोहर के रूप में विद्यमान है। वर्तमान लोकतंत्रात्मक प्रणाली में संख्या बल का महत्व है। संख्या, संगठन व संगठित होने से एक मंच पर समेकित होने से जाहिर होती है। लाभकारी व विकास परक कानून संगठित, ऊर्जावान व संघर्षरत समुदाय के लिए निर्मित होते हैं, मरी हुई कौम के लिए नहीं। जब तक संसदीय कानून किसी समुदाय के उत्थान के लिए नहीं बनेगा उस समुदाय का समग्र विकास एक कोरी कल्पना भर है।

अवसर है विश्वकर्मा पूजा का, उसे आयोजित करने का, धूमधाम से मनाने का, अपनी एकजुटता, सामर्थ्य और पहचान को प्रदर्शित करने का। याद रखिए श्री विश्वकर्मा पूजा वर्तमान में सभी कल कारखानों, औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों, निजी वर्कशॉपों आदि में व्यक्तिगत रूवं सार्वजनिक रूप से बिना किसी भेदभाव के 17 सितंबर को प्रत्येक वर्ष मनाई जाती है। भगवान विश्वकर्मा के प्रति समाज के किसी वर्ग में किसी तरह की उदासीनता या विद्वेष की भावना नहीं है। श्री विश्वकर्मा भगवान सर्वमान्य एवं सदैव पूज्य अविवादित देव हैं। सृष्टिकर्ता एवं दुखहर्ता हैं। सत्यनारायण कथा की भांति श्री विश्वकर्मा भगवान की कथा भी समाज में प्रचलित है जो सर्व फलदायनी है। आवश्यकता है विश्वकर्मा एवं उनके वंशी शिल्पकारों के साहित्य को उजागर करने, उनके पठन-पाठन पर बल देने एवं इस समुदाय के सर्वांगीण विकास हेतु हर स्तर पर कानून बनवाने के लिए वैधानिक लड़ाई लड़ने की। आइए हम सब संगठित हों और साथ ही भगवान विश्वकर्मा की पूजा के अवसर पर हृदय को समर्पित करते हुए सम्मिलित हों।

लेखक-
हरेश्याम विश्वकर्मा, एडवोकेट
सिविल कोर्ट, बस्ती।
मो0-8874574302

श्री विश्वकर्मा इतिहास

हम हैं विश्वकर्मा संतान,
विश्वकर्मा के कार्य महान,
मनु, मय, त्वष्टा, शिल्पी, दैवज्ञ,
इनसे हैं सब लोग विज्ञ,
सब करते थे उनका सम्मान,
हम है विश्वकर्मा संतान।

कलाकृति में है इनका ज्ञान,
थल में गाड़ी जल में जलयान,
आसमान में वायुयान,
हम हैं विश्वकर्मा संतान।

इनकी कृत जग में विद्यमान,
देश प्रगति का सही पैमान,
ज्ञान विज्ञान में योगदान,
इन्हीं की रचना पुष्पक विमान,
जो कुबेर को था प्रदान,
हम हैं विश्वकर्मा संतान।

सतयुग, द्वापर, त्रेता, कलयुग,
सब युग में था इनका सम्मान,
फिर आज बने भयंकर अज्ञान,
हम हैं विश्वकर्मा संतान।

साहबदीन विश्वकर्मा, बस्ती
जिला अध्यक्ष
अखिल भारतीय
विश्वकर्मा शिल्पकार महासभा
जनपद-बस्ती

विश्वकर्मा पूजा

धनपति प्रसाद विश्वकर्मा

'विश्वकर्मा' गुणानुरूप परमात्मा का नाम है। विश्व का कर्तार होने के कारण उसे 'विश्वकर्ता' और 'विश्वकर्मा' कहा गया है। देवताओं का शिल्पकर्म करने के कारण वे 'देव शिल्पी' हैं। वे क्षण मात्र में अनेक दिव्य अस्त्र-शस्त्र, आभूषण-अलंकार, वाहन-विमान, भवन-प्रसाद, सरोवर-उद्यान आदि का निर्माण करने की अद्भुत क्षमता रखने वाले देवता हैं। वह समस्त कला एवं विधाओं में अत्यंत निपुण एवं उनके प्रवर्तक आचार्य हैं।

भगवान विश्वकर्मा संपूर्ण मानव जाति के हितकारी होने के कारण लोक पूज्य हैं। वह जन-जन की जीविका के कला प्रणेता और जीवनदाता हैं। वे अपनी सिर्फ कला से संसार को अलंकृत एवं सुसंस्कृत करने वाले देवता हैं। संसार के कण-कण में उनकी कला समाई होने के कारण वे हमें प्रतिपल याद आते रहते हैं। कोई भी द्रष्टा उस स्त्रष्टा की कला को अनदेखा कैसे कर सकता है! पुराणकार व्यास जी ने ऐसे महान शिल्प प्रवर्तक की वंदना करते हुए कहा है-

दिविः भुव्यंतरिक्षे वा पाताले वापि सर्वशः।

यत्किंचिच्छिल्पिनां शिल्प तत्प्रवर्तके नमः।।

अर्थात् आकाश, भूमि, अंतरिक्ष और पाताल में जो कुछ भी शिल्पियों का शिल्प दिखाई दे रहा है, उसके प्रवर्तक विश्वकर्मा को नमस्कार है।

महाभारत शांतिपर्व में भी भगवान विश्वकर्मा की स्तुति करते हुए कहा गया है-

विश्वकर्मन् नमस्तेऽस्तु विश्वात्मन्विश्वसंभवः।

अपवर्गोऽसि भूतानां पञ्चानां परतः स्थितः।।

अर्थात् हे विश्वकर्मन्! यह संपूर्ण विश्व आपकी रचना है, आप समस्त विश्व के आत्मा और उत्पत्ति स्थान हैं तथा पांचों भूतों से अतीत होने के कारण नित्यमुक्त हैं, आप को मेरा नमस्कार है।

विश्वकर्मा पूजा 17 सितंबर को क्यों?-

ऐसी मान्यता है कि भगवान विश्वकर्मा ने संसार की रचना कन्या संक्रांति में की थी। कन्या संक्रांति प्रायः 17 सितंबर को पड़ती है। इसलिए लोग इस दिन सृष्टिकर्ता की पूजा करते हैं तथा इसे समारोह पूर्वक मनाते हैं। शिल्पकला, मूर्तिकला, वास्तुकला, विज्ञान, तकनीक, मशीनरी, अभियांत्रिकी एवं निर्माण कार्यों से जुड़े लोग इस संक्रांति को अपनी उन्नति एवं विकास का दिन मानते हैं। उनका विश्वास है कि इस दिन भगवान विश्वकर्मा की पूजा करने से सुख समृद्धि में वृद्धि होती है तथा मनवांछित फल की प्राप्ति होती है। हमारे देश में संक्रांति पर आधारित कुछ पर्व हैं जैसे सिक्खों का त्योहार बैसाखी मेष संक्रांति में मनाया जाता है, जो प्रायः 13 अप्रैल को पड़ता है। हिंदुओं का खिचड़ी नाम का त्यौहार मकर संक्रांति में मनाया जाता है जो प्रायः 14 जनवरी को पड़ता है। इसी श्रेणी में 'विश्वकर्मा पूजा' पर्व भी आता है।

विश्वकर्मा पूजा का विधि-विधान- विश्वकर्मा पूजा के दिन मंदिरों में मूर्तियों का सिंगार किया जाता है, विधि-विधान से भगवान विश्वकर्मा की पूजा-अर्चना, हवन-आरती आदि होती है। इसके पश्चात प्रसाद वितरित किया जाता है। भगवान विश्वकर्मा के साधक

एवं आराधक इस दिन कल-कारखानों, औद्योगिक संस्थानों, तकनीकी प्रतिष्ठानों, कार्यशालाओं, प्रयोगशालाओं आदि में कल-पुर्जों, मशीनों और उपकरणों आदि की साफ-सफाई करके विधि-विधान से भगवान की पूजा-अर्चना करते हैं, प्रसाद बांटते हैं, कीर्तन-भजन करते हैं तथा आत्मकल्याण व लोक कल्याण के लिए भगवान से प्रार्थना करते हैं।

विश्वकर्मा पूजा का महत्व एवं आवश्यकता-

प्रत्येक पूजा की भांति विश्वकर्मा पूजा का भी अपना महत्व है। जिस प्रकार दीपावली के दिन लक्ष्मी-गणेश पूजा और नवरात्रि में दुर्गा पूजा विशेष फलदाई होती है, उसी प्रकार कन्या संक्रांति में मनाई जाने वाली विश्वकर्मा पूजा भी विशेष फलदाई होती है। विश्वकर्मा पूजा आत्मकल्याण व लोककल्याण दोनों के लिए है। इस दिन लोगों में एक नया जोश और उत्साह दिखाई पड़ता है। लोग नई आशा और विश्वास के साथ संकल्पित होकर अगले दिन से पुनः अपने कार्यों में संलग्न हो जाते हैं।

वास्तव में भगवान विश्वकर्मा की पूजा लोक हितकारी एवं जन कल्याणकारी है। ऐसे महान देवता की पूजा करना, उसे मनाना और उनके संदेश को जन-जन तक पहुंचाना साधकों का सच्चा धर्म है। अतः प्रत्येक प्राणी को चाहिए कि वह अपनी वह अपने राष्ट्र की उन्नति के लिए भगवान विश्वकर्मा की पूजा-आराधना व उपासना अवश्य करे।

-धनपति प्रसाद विश्वकर्मा
शिक्षक

'विश्वकर्मा'

आज यह लेख लिखने बैठा तब सोचने लगा कि इस प्रकार इस विषय पर जो भी मैं लिखने जा रहा हूं, लिखूं या नहीं? यह सोचा क्यों ना अपनी व्यक्तिगत भावनाओं से अन्य सभी को अवगत कराएं। मन में एक डर है कि हो सकता है मेरी बात कुछ लोगों को अच्छी ना लगे, लेकिन यह भी हो सकता है कि काफी लोग मुझसे सहमत हों। उन्हें हिम्मतवादी सोचा और लिखने बैठ गया। समाज की बैठक के बाद घर आकर थोड़ा आराम किया, कुछ देर टेलीविजन पर समय बर्बाद किया। यूं कहें तरोताजा होने का मूड था। फ्रेस हुआ और कागज कलम लेकर बैठ गया। दिमाग में उधेड़बुन अभी भी चल रहा है, लिख तो रहा हूं पता नहीं संपादक को यह लेख अच्छा लगे या नहीं। हो सकता है इसे कूड़ेदान के हवाले कर दें। फिर याद आया गीता का वह श्लोक जिसका भावार्थ है कि- 'कर्म ही वश में है, फल ईश्वर के हाथ में है' सो लिख रहा हूं।

आज से 30 वर्ष पूर्व मैं विश्वकर्मा साहित्य से परिचित हुआ। तब मैं विज्ञान वर्ग से स्नातक हुआ था। उसके बाद कानून की डिग्री प्राप्त की। मेरे पिताजी यगोपवीत जनेऊ धारण करते थे। पूछने पर उन्होंने बताया था कि विश्वकर्मा वंशीय उच्च वर्ग के हैं। वेद, उपवेद, रामायण, महाभारत आदि में हमारे वंश का वर्णन है। हम सब खानदानी द्विज हैं। यह बात आज से 40 साल पुरानी है जब भारत देश आजाद हुआ, पिताजी जवान थे। मुंबई में जहाजरानी में नौकरी करते थे। बाबा के गुजरने से अचानक गांव वापस आना पड़ा और फिर गांव के होकर रह गए। पिताजी कम पढ़े-लिखे व्यक्ति थे फिर भी अपने गोत्र-वंश के बारे में पूर्वजों से उन्हें ज्ञात था। उन्हें कभी अपने आपको साबित करने के लिए किसी आधुनिक साहित्य की जरूरत नहीं पड़ी।

चूंकि विश्वकर्मा वंश का पुरातन इतिहास है। प्राचीन ग्रंथों में पर्याप्त वर्णन है और जो खानदान पूर्वजों से बंधा है, उनके संस्कारों को भूला नहीं है। आज भी आचार-विचार उच्च कोटि के हैं। पठन-पाठन, उठना-बैठना, गृह-निर्माण, स्वच्छता आदि पर विशेष ध्यान है। उन्हें कौन नहीं पूजता? देश आजाद हुआ। अनेक समाजों ने अपने-अपने हिसाब से आजादी की लड़ाई में सहयोग किया। फिर संगठित हुए। कुछ समाज अग्रणी थे, कुछ पिछड़े थे, बाकी दलित थे। विश्वकर्मा समाज भी पुश्तैनी कारोबार में अग्रणी था, आज भी है। पूजा-पाठ पर ऐसे लोगों का विशेष ध्यान रहता है। राजनीतिक रूप से संगठित नहीं हुए। जो एक मंच पर आए उन्हें संविधान में अनेक सुविधाएं हासिल हुई

हरेश्याम विश्वकर्मा, एडवोकेट

और वह आगे बढ़ते चले गए। विश्वकर्मा समाज आजादी के पहले और बाद में, यहां तक कि आज भी क्या करता रहा और क्या कर रहा है यही पीड़ा मुझे सालती रहती है। इसलिए अपनी पीड़ा से छुटकारा पाने हेतु मुझे लिखना पड़ रहा है, यह मेरे दिमाग में एक सवाल बन कर मुंह बाए खड़ा है। लगता है जैसे मुझे निकल ही जाएगा। इसलिए जरूरी हुआ कि मैं अपनी भावनाओं और कष्ट को आप सभी से शेयर करूं, तो लिख दे रहा हूं।

जब से मैंने विश्वकर्मा समाज पर लिखी और छापी जा रही पत्र-पत्रिकाओं को पढ़ना प्रारंभ किया, या यूं कहिए जब से वह मेरे संज्ञान में आई और मैंने उन्हें उलट-पुलट कर देखा या पढ़ा, चाहे वह पत्रिका मुंबई से छपी हो या लखनऊ से या दिल्ली से निकली हो या उत्तराखंड से या मध्य प्रदेश से प्रकाशन हुआ हो या किसी अन्य प्रदेश से। अमूमन सभी पत्रिकाओं में विश्वकर्मा साहित्य का उल्लेख रहता है। यहां तक तो ठीक है, लेकिन अक्सर सभी पत्रिकाओं में विश्वकर्मा वंश के लोगों को 'ब्राह्मण' साबित करने के बाबत जरूर लेख आता है। यह कार्य कब से चला आ रहा है और आज भी चल रहा है और कब तक चलेगा मुझे नहीं पता, मेरी पीड़ा इसी बात को लेकर है। हमारे साहित्यकार, लेखक, कवि, राजनीतिक राजनीतिज्ञ आदि विद्वान अभी भी इस आधुनिक युग में अपने को अनेक तर्कों के द्वारा, श्लोकों के उद्धरण द्वारा वेद-उपवेद के वर्णन को उद्धृत करके उसके माध्यम से स्वयं को ब्राह्मण साबित करने में ही सारी उर्जा खपाते चले जा रहे हैं। समाज को संगठित करने के बजाय उन्हें शासन में भागीदारी सुनिश्चित कराने के बजाए केवल और केवल ब्राहमण साबित करना चाहते हैं। क्या अपने आपको ब्राह्मण साबित कर देने से इस लोकतांत्रिक व्यवस्था वाले देश में समाज को कुछ हासिल हो सकेगा? क्या समाज के हक में किसी कानून का निर्माण हो सकेगा जिससे समाज का जीवन स्तर ऊंचा उठ सके? क्या हमारी राजनीतिक भागीदारी सुनिश्चित हो सकेगी? क्या उच्चवर्गीय बन जाने से मेरा बेटा या बेटी आईएएस, पीसीएस, इंजीनियर, डॉक्टर, वकील, एकाउंटेंट, प्रबंधक आदि स्वतः बन जाएगा? वर्तमान पूंजीवादी व्यवस्था में, मेरा मानना है कि जो पूंजीपति है, वही उच्च वर्गीय है और वही पूज्य ब्राह्मण है। वह चाहे राजनीति से पैसा कमाया हो या नौकरी से या व्यापार से अथवा खेती से या अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा देकर एक मुकाम हासिल किया हो। शिक्षा जगत में नाम कमाया हो आदि-आदि।

हमारा समाज कब तक अपनी उर्जा, अपना ज्ञान, अपना समय यूं ही बर्बाद करता रहेगा। संगठित होने की बजाए, शिक्षित होने की बजाए केवल ब्राह्मण बनने में अपने अमूल्य समय को धन को नष्ट करता रहेगा। हमें अप तो जागना होगा। इस बिन्दु पर आज के परिवेश में विचार करना होगा, क्या सही है क्या गलत है इस निष्कर्ष पर पहुंचना होगा। हम विश्वकर्मा हैं, क्या यह कम सम्मानजनक शब्द है। विश्वकर्मा का गुणगान कौन नहीं करता है? चाहे देशी हो या विदेशी।

विश्वकर्मा की एक अलग पहचान है, एक अलग परंपरा है। हम स्वयं को विश्वकर्मा बनकर क्यों नहीं जीना चाहते? स्वयं को विश्वकर्मा बनकर दिखाओ। विश्वकर्मा बनना ही कठिन है। जब आप विश्वकर्मा बन जाओगे, स्वयं को विश्वकर्मा सिद्ध कर दोगे, तब और कुछ भी साबित करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। विश्वकर्मा बनते ही आपकी एक अलग पहचान बन जाएगी, पहचान कायम होते ही आप पूज्य हो जाओगे। आपको कोई हेय दृष्टि से देखने की हिम्मत नहीं करेगा। विश्वकर्मा भाइयों अब तो सुधर जाओ, विशुद्ध रूप से विश्वकर्मा बनकर दिखाओ। जब विश्वकर्मा बन जाओगे तब और कुछ भी बनने की या सिद्ध करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। स्वयं भी विश्वकर्मा बनो, औरों को भी बनाओ। विश्वकर्मा शब्द का मतलब तो समझते ही हैं आप, फिर क्यों उलझन में पड़े हैं? सजग हो जाइए, चोर बहुत हैं आज के जमाने में। सब कुछ उड़ा ले जाएंगे, सो संभल जाइए और सिर्फ विश्वकर्मा बनिये।

आपका साथी-
हरेश्याम विश्वकर्मा, एडवोकेट
सिविल कोर्ट, बस्ती।
मो0-8874574302

श्री विश्वकर्मणे नमः

सृष्टि निर्माण के साथ-साथ भगवान विश्वकर्मा का प्रादुर्भाव हुआ। काल निर्धारण के आधार पर सतयुग के मध्य काल में हुआ, जो आज तक विद्यमान है। ब्रह्मा जी को ही सृष्टि निर्माण का श्रेय जाता है। सर्वप्रथम ब्रह्मा जी ने घोर तप किया। इसके बाद अभी जिह्वा से सरस्वती का प्रादुर्भाव हुआ। फिर आकाश से आवाज जैसा गुण उत्पन्न हुआ। पुनः नाभि और आकाश के संयोग से नाद ब्रह्मा उत्पन्न हुआ, यह नाद ब्रह्मा ही प्राण है 'ओंकार' है।

तत्पश्चात सरस्वती की कृपा से उत्पन्न हुई वाणी से नाद ब्रह्मा से अनेक प्रकार की वाणी उत्पन्न हुई। ब्रह्मा जी के चार मुख से चार वेद निकले। पांचवें मुख से मलिन शब्द (झूठ) बोला निकला जिसको देवाधिदेव महादेव जी काट दिए। सिर्फ चार मुख होने के कारण चतुरानन कहलाए।

अब सृष्टि रचना के बारे में ब्रह्माजी सोचने लगे। चारों ओर जल और आकाश के अतिरिक्त कुछ नहीं था। सोचने लगे कि सृष्टि कैसे रची जाय? ब्रहमा जी को चिंतित देख विष्णु जी ने पृथ्वी उत्पन्न किया, जिस पर गुण गंध भी उत्पन्न हुआ। चारों ओर अजीब सुगंध फैल गई जिससे ब्रह्मा जी का अंतर्मन प्रसन्न हो गया। अब ब्रह्मा जी जल, पृथ्वी और आकाश से वायु और तेज (अग्नि) को उत्पन्न किया। फिर सृष्टि रचना में जड़ चेतन का प्रादुर्भाव हुआ। ब्रह्मा जी को चिंता हुई कि सृष्टि को कैसे आगे बढ़ाया जाय? यह सोचते-सोचते दोनों भौहों की रगड़ से एक दिव्य पुरुष उत्पन्न हुआ, जिसे रुद्र नाम दिया गया।

सर्व प्रथम सृष्टि में तीन शक्तियां उपलब्ध हुई- ब्रह्मा, विष्णु, सरस्वती। तीनों शक्तियों ने मिलकर सृष्टि का आरम्भ शुरू किया। विष्णु जी ब्रह्मा जी द्वारा रचित सृष्ट का पालन-पोषण तथा रक्षण करेंगे। सभी हर प्रकार की रक्षा करेंगे और अभयदान देंगे। किंतु अवतार लेने का अधिकार केवल विष्णु जी को ही होगा। तुम दोनों शिवजी एवं सरस्वती को अवतार लेने का अधिकार नहीं होगा। आदिशक्ति ने रुद्र को तीन शक्ति प्रदान किया। शिव रूप से संसार का मानवों का कल्याण, शंकर रूप से राक्षसों और दानवों को वरदान देना और तीसरा रुद्र रुप से सृष्टि का संहार का वरदान दिया।

ब्रह्मा जी ने सर्वप्रथम सनत कुमारों को उत्पन्न किया। तदुपरांत सप्त ऋषियों को उत्पन्न कर प्रजापतियों को बनाया। 3 लोक 14 भुवन 4 युगों को बनाकर कार्या आगे बढ़ाया। जीव निर्माण कर 84 लाख योनियों का निर्माण किया। यह सारी उत्पत्तियां मानसाधार थी, जिसके कारण सृष्टि का विस्तार नहीं हो पाया। अतः ब्रह्मा जी ने मथुनी सृष्टि का निर्माण कर अपने शरीर के दाएं भाग से पुरुष और बाएं भाग से स्त्री को उत्पन्न किया। पुरुष का नाम स्वयंभू मनु और स्त्री का नाम सतरुपा रखा, जिनसे सृष्टि निर्माण और विस्तार हुआ। इस मैथुनी सृष्टि का निर्माण और मनु से मानव कहलाये।

मैथुनी सृष्टि की रचना होने पर सर्वप्रथम प्रियव्रत और उत्तानपाद से दो पुत्र और तीन कन्याएं (आकृति, देवहूति, और प्रसूत) का जन्म हुआ। देवहूति का विवाह कर्दम ऋषि के साथ हुआ। बहुत समय पश्चात ब्रह्मा ने देखा कि उनके द्वारा रचित सृष्टि उत्तम है किंतु रोचकता नहीं है, शिल्पी सुंदरता का अभाव है। उसी समय ऋषि अंगिरा अपनी पुत्री यमुना का विवाह 8वें वसु महर्षि प्रभास के साथ कर दिया। इन्हीं भुवना और प्रभाष की उत्तम संतान देव शिल्पी प्रभु विश्वकर्मा जी हैं।

श्री विश्वकर्मा जी को कुशाग्र बुद्धि एवं शिल्प कला में महारत उपलब्ध होने के कारण देव शिल्पी और प्रजापति बनाया। ब्रह्मा जी ने सृष्टि को सौन्दर्य प्रदान करने के लिए विभिन्न प्रकार की धातुएं उत्पन्न कराई। जैसे सोना, चांदी, लोहा, तांबा आदि। यह धातुएं पृथ्वी के

साहबदीन विश्वकर्मा, बस्ती

जिला अध्यक्ष
अखिल भारतीय
विश्वकर्मा शिल्पकार महासभा
जनपद-बस्ती

गर्भ से उत्पन्न हुई जिससे विभिन्न प्रकार के औजार-आभूषण आदि की रचना कर मानव जीवन को सुखी, समृद्ध व उन्नत बनाया।

आज वही विश्वकर्मा संतान कुलीन वंश में जन्म लेकर अनादर के पात्र बने हैं। जबकि सृष्टि का कोई निर्माण कर इनके बिना असंभव है। इतना ही नहीं देवगुरु बृहस्पति केअ प्रसन्न होने पर देवलोक में इंद्र की पुरोहिती विश्वरुप ने किया। आज के परिवेश में भी विश्वकर्मा का योगदान सराहनीय है। फिर भी विश्वकर्मा समाज को जिस ऊंचाई पर आसीन होना चाहिए था वहां से निम्नतर स्थान पर टिका है। वेद-विद्या से कोसों दूर, शिक्षा से भी बहुत दूर स्थान बनाया। खान-पान और व्यसन को अंगीकार कर निम्न कोटि में गणना करा लिया। क्या इस कुल में जन्म लेने की यही उपलब्धि समीचीन है।

त्रिलोक शिल्पी प्रजापति भगवान विश्वकर्मा की संतानों तुम्हारी अमर कीर्ति वेदों-पुराणों में भरी पड़ी है, पढ़ो-पढ़ाओगे तब जानकारी होगी। पंचदेव श्रीमद् भागवत कथा के प्रारंभ में ही प्रियव्रत और राजा उत्तानपाद की कथा प्रारंभ होती है। प्रियव्रत स्वयंभू मनु के पुत्र थे, प्रजापति विश्वकर्मा की पुत्री बरर्हिष्मती से विवाह हुआ। उनके 10 पुत्र एक कन्या हुई। प्रियव्रत संपूर्ण ब्रह्मांड के स्वामी थे। इन्हीं के भाई राजा उत्तानपाद थे, उनसे ध्रुव का जन्म हुआ था (कथा श्रीमद्भागवत का प्रारंभ)। इस प्रकार तुम्हारा कुल, कार्य और इतिहास अति प्राचीन एवं वेद सम्मत है। विश्व निर्माण में तुम्हारा कार्य विश्व प्रसिद्ध है। अलकापुरी, द्वारकापुरी, सुदामापुरी, इंद्रप्रस्थ, लंकापुरी, पुष्पक विमान के साथ-साथ निर्माण की गाथा सेतु निर्माण की गाथा आजीवन विश्व विख्यात है। सेतु समुद्रम को तोड़ने का प्रयास विदेशी तकनीकी यंत्रों को फेल होना पड़ा।

अतः घोर तन्द्रा से जागो, उठो और प्रगति का मार्ग अपनाओ। बच्चों को संस्कार देकर उच्च शिक्षा तक पहुंचाओ, समाज में एकता के सूत्र में रखो और राजनीति में भागीदारी बनो। तुम्हारी संख्या कम नहीं है, कमी है तो सिर्फ एकता की। तुम सब मिलजुल कर रहने और आपस में रोटी-बेटी का संबंध बनाओ। विश्वकर्मा भगवान के पांचों पुत्रों एक मंच पर आना होगा और राजनीति पहचान के साथ साथ उच्च शिक्षा तक संतानों को पहुंचाना होगा। क्या लड़की, क्या लड़का दोनों का समाज उत्थान में भागीदारी सुनिश्चित करना होगा तभी विश्वकर्मा समाज का उत्थान संभव होगा। विश्वकर्मा वंशजों को वेदों और पुराणों का भी अध्ययन करना चाहिये जिससे अपने गौरवशाली इतिहास की जानकारी हो सके।

विश्वकर्मा के वरद पुत्र

विश्वकर्मा के वरद पुत्र,
स्वर्ग यहीं हम बनाएंगे।
पिछड़े पांच पुत्रों को,
सबसे ऊंचा उठाएंगे।।

नहीं चाहिए नौकरी हमें,
अपने औजारों से कमाएंगे।
एक-एक पैसा जमा कर,
हम ऊंचा महल बनाएंगे।।

कोई न रहेगा गरीब और पिछड़ा,
ऐसा राह दिखलाएंगे।
विश्वकर्मा मंत्र पाठ पढ़ाएंगे,
जग में अपना नाम कमाएंगे।।

डॉक्टर गणेश हैं पथ प्रदर्शक,
उनके बतलाए पर हम जाएंगे।
सच कहता हूं मैं,
इस धरती पर स्वर्ग यहीं बनाएंगे।।

समस्त देशवासियों को विश्वकर्मा पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ0 गणेश दत्त शर्मा
प्रधान संपादक एवं प्रकाशक
''विश्व शिल्पी''
वैशाली, बिहार
मो0-9572251394

मंथन

आ गई विश्वकर्मा पूजा। पूजा का प्रचलन प्राचीन है, फिर भी संगठन बने। एक के बाद अनेक। पहले गांव-मोहल्ले के लोग मिल बैठकर पूजन कर लेते रहे। बाद में इकट्ठा होना शुरू किए। कुछ संगठित भी हुए, कुछ दिन यह परिपाटी चली। जो लोग इकट्ठा होकर कार्यक्रम में सम्मिलित होते रहे उन्होंने सोचा मैं चंदा देता हूं, इससे अच्छा है अपने घर पर ही क्यों ना आयोजन कर लूं। कुछ लोगों ने इस अवसर पर व्यक्तिगत प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए अपने-अपने आवास पर सहभोज का कार्यक्रम करने लगे। सामूहिक आयोजन में इस प्रकार उपस्थिति कम होने लगी, एकता का अभाव साफ नजर आने लगा।

यह विचारणीय प्रश्न है। हम बचपन से पढ़े हैं, 'जिस देश जाति में जन्म लिया, बलिदान उसी पर हो जावें।' इसके बावजूद हम या हमारा समाज आज भी इस लोकतांत्रिक युग एवं व्यवस्था में अपने अहं से ऊपर नहीं उठ सका। स्वार्थपरता एवं 'एको अहं द्वितीयो न अस्ति' की संकीर्ण भावना ने समाज का अहित ही किया है। एक तरफ हम अपनी बौद्धिकता का बखान करते नहीं अघाते, दूसरी तरफ हम अगले को सहन नहीं कर सकते। अगला फलीभूत हो, आगे बढ़े, उसे उठाने की बजाय हमें उसकी टांग खींचने में अधिक आनंद मिलता है। हम अपने स्वार्थ बस कुछ दिन कुछ लोगों को साथ लेकर चलते तो हैं, परंतु जब उनमें से कोई एक अपनी भूमिका व पहचान कायम करने लगता है तब हम ही दगा देते हैं, यह कब तक चलेगा।

पूजन का समय आने पर हमारी सक्रियता थोड़ी बढ़ जाती है। समाप्त होने के बाद कुछ दिन हिसाब किताब व एक दूसरे पर दोषारोपण में बीत जाता है। फिर बात आई-गई हो जाती है। फिर बैठकों का दौर अगले साल तक स्थगित। हम क्या चाहते हैं? क्या करना चाहते हैं? समाज को क्या देना चाहते हैं? समाज के उत्थान में हमारा योगदान क्या हो सकता है? हम किसी व्यक्ति के काम आ सकते हैं या नहीं? यह सब एक दिन इस पर चर्चा के बाद समाप्त हो जाती है, लोग अपने-अपने काम-धंधों में व्यस्त हो जाते हैं। हमारा काम व पैतृक व्यवसाय कुछ ऐसा है कि हम नीचे ही देखते हैं जिसके ऊपर देखने की फुर्सत नहीं मिलती। मीटिंग के दिन हमारे पास इतने अधिक काम हो जाते हैं कि हम चाहकर भी फुर्सत नहीं निकाल पाते। हम व्यवसाई हैं ना, इसीलिए। जैसे अन्य समाज के लोग रोजगार करते ही ना हों, वह हमेशा खाली रहते हों तभी उनकी बैठकें सफल होती हैं। आज की तारीख में विश्वकर्मा पूजन करीब-करीब हर जिला मुख्यालय पर होता है। लेकिन क्या 17 सितंबर को एक जगह एक स्थान पर समुदाय के सभी लोग सम्मिलित होते हैं। कतई नहीं, क्योंकि उनके संगठन जो अलग-अलग हैं। संगठन की छोड़िए कुछ लोग जो चलते पुर्जे के हैं वह चंदा देने के बजाय किसी संगठन के बैनर तले होने वाले समारोह में शिरकत करने से बेहतर अपने अहं को पूरा करते हुए घर पर ही पूजा का आयोजन कर लेते हैं। ऐसे लोग सायंकाल भंडारा भी करते हैं। मेरी समझ से ऐसे ही लोग हमारी एकता के प्रदर्शन में सबसे बड़ी बाधक हैं। इन्हें कैसे समझाया जाए, यह तो खुद समझदार हैं, इसलिए किसी की सुनते ही नहीं। अरे भाई बुद्धिमान जो हैं। शिल्प ज्ञानी हैं ना। इतने अच्छे कलाकार हैं कि उन्हें एकता के प्रदर्शन की क्या जरूरत आन पड़ी? वह सोचते हैं हमारे सामने सारे कुर्ते वाले फीके हैं हम ही रंग डालेंगे तभी निखार आएगा, इसलिए दूर ही रहते हैं। क्या ऐसे लोग संगठन व समाज के दुश्मन नहीं? इन्हें भगवान विश्वकर्मा सद्बुद्धि दें। वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था में नारा प्रचलित है 'जिसकी जितनी संख्या भारी, उसकी उतनी शासन में भागीदारी' फिर भी हम नहीं चेते। हम कब होश संभालेंगे, हमें समझ इतनी सी कब आएगी। क्या हमें नहीं लगता कि शासन सत्ता में हमारा भी प्रतिनिधित्व होना चाहिए। एक बात सदैव याद रखिए कि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता, वह स्वयं को प्रफुटित हो सकता है, अपना निखार कर सकता है परंतु वह ताकत उसमें नहीं आती कि वह औरों के काम आ सके। शासन सत्ता वह चाबी है जिससे सभी ताले खुलते हैं, आपने भी यह सुना होगा, पढ़ा होगा, पर उस दिशा में आप अग्रसर कब होंगे? हम सब अपना समय कब निकालेंगे? कब हमारे अंदर सामाजिकता की भावना आएगी? हम स्वयं से ऊपर कब उठेंगे? गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा है- 'परहित सरिस धर्म नहिं भाई।' हम पढ़ते तो हैं, परंतु कर्तव्य पालन में भूल क्यों जाते हैं? हमारा विश्वकर्मा पूजा का आयोजन तभी सफल होगा जब हम संगठित होंगे, एक बैनर तले आएंगे, एक मंच पर अपनी बात रखेंगे और एक राय होकर एक लक्ष्य तय करेंगे।

हरेश्याम विश्वकर्मा, एडवोकेट
सिविल कोर्ट, बस्ती।
मो0-8874574302

विश्वकर्मा पूजा

-डॉ0 के0एल0 विश्वकर्मा
दिलशाद कॉलोनी, दिल्ली

प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक भारत के प्रत्येक प्रांत के विकास में पूजापाठ की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। अपनी-अपनी आध्यात्मिक तथा वैज्ञानिक मान्यताओं को स्थानीय जलवायु के अनुसार देश के लगभग सभी प्रांतों में सामान्य एवं विशिष्ट पूजा पद्धतियों तथा पूजा स्थल में प्रसिद्धि प्राप्त की। हमारे प्राचीन ग्रंथ एवं पुराण उसके साथी हैं। पूर्व में वाराणसी, प्रयाग, दक्षिण में कामक्ष, जगन्नाथपुरी, पश्चिम में द्वारिकानगरी, सुदामापुरी और उत्तर में रघुनाथ मंदिर, जम्मू और शंकराचार्य मंदिर श्रीनगर, उत्तराखंड में बद्रीनाथ, केदारनाथ, हरिद्वार आदि स्थानों के भौगोलिक अध्ययन से जो कुछ समझ में आता है उससे केवल आश्चर्य होता है कि वह लोग कौन थे जिनके विज्ञान का विस्तार आज भी दिखाई पड़ रहा है तथा जिनकी तकनीकी योग्यता की तुलना में आज का तकनीक बौना साबित हो रहा है। उनके लोगों के मन और मस्तिष्क को कौन प्रोत्साहित करता था और आज किसकी प्रेरणा है जिसके चलते मानव का रूप यान्त्रिकी उर्जा ने ले लिया है, यद्यपि यंत्र आज भी स्कूल ही हैं। इन स्थूल यंत्रों की उर्जा में उस मानव की मानसिक ऊर्जा अन्तर्निहित थे, जिसे आज की भाषा में अभियंता, इंजीनियर, टेक्नीशियन कहा जाता है। परंतु प्राचीन काल में इसे विश्व रचयिता या विश्वकर्मा कहा जाता है। यह संबोधन मानव की विकास में ब्रह्मा तथा भौतिक जगत के विकास में कर्मा कहा जाता था। यह संबोधन किसी जाति-धर्म या वर्ग

''पूर्व में वाराणसी, प्रयाग, दक्षिण में कामक्ष, जगन्नाथपुरी, पश्चिम में द्वारिकानगरी, सुदामापुरी और उत्तर में रघुनाथ मंदिर, जम्मू और शंकराचार्य मंदिर श्रीनगर, उत्तराखंड में बद्रीनाथ, केदारनाथ, हरिद्वार आदि स्थानों के भौगोलिक अध्ययन से जो कुछ समझ में आता है उससे केवल आश्चर्य होता है कि वह लोग कौन थे जिनके विज्ञान का विस्तार आज भी दिखाई पड़ रहा है तथा जिनकी तकनीकी योग्यता की तुलना में आज का तकनीक बौना साबित हो रहा है। उनके लोगों के मन और मस्तिष्क को कौन प्रोत्साहित करता था और आज किसकी प्रेरणा है जिसके चलते मानव का रूप यान्त्रिकी उर्जा ने ले लिया है, यद्यपि यंत्र आज भी स्कूल ही हैं। इन स्थूल यंत्रों की उर्जा में उस मानव की मानसिक ऊर्जा अन्तर्निहित थे, जिसे आज की भाषा में अभियंता, इंजीनियर, टेक्नीशियन कहा जाता है।''

का नहीं है, बल्कि प्रत्येक मानव के हृदय में प्रज्जवलित उस ज्ञानाग्नि रखने का है जो पूजा की नीतियों से महसूस करके मन के द्वारा मस्तिष्क में जागृत होती है। पूजा में प्रयुक्त सामग्री व मंत्र शब्दों की तरंगे मानव के अंदर ऐसे रस तत्वों का संचालन करती हैं जिससे लंगड़ा चलने लगता है, गूंगा बोलने लगता है और अंधा देखने लगता है। उसके अंदर का विश्वकर्मा जगतगुरु स्वतः ही प्रेरणा का स्रोत बनकर बहने लग जाता है। जैसे नवजात शिशु अपनी मां से चिपकते हुए दूध पीने का स्रोत ढूंढ लेता है, उसी प्रकार विश्वकर्मा पूजा से जुड़ने के बाद आम मानव भी स्वयं ही संसार रचना का दायित्व संभालने की चेतना से पूर्ण महसूस करने लगता है। भारत में पूजा के महत्व को अब सरकार भी गंभीरता से महसूस करने लगी है। सरकार से जुड़े विद्वानों ने भी स्वीकार किया है कि पूजा द्वारा मानव के अंदर संस्कारों, क्रियाओं और परंपराओं में छिपे गुप्त ज्ञान से होने वाला विकास दिखने लगता है, जिसका नियामक विश्वकर्मा ही होता है। परंपराओं द्वारा होने वाले विकास को मद्देनजर रखते हुए कुछ राज्य सरकारों ने 17 सितंबर को विश्वकर्मा पूजा दिवस का उत्सव करके समाज को राष्ट्र के विकास से प्रसारित किया है।

पिछले अनेक वर्षों की तरह इस वर्ष भी देशभर में 17 सितंबर को विश्वकर्मा पूजा का आयोजन किया गया। लगभग सभी कंपनियां और फैक्ट्रियां अपने कल-कारखानों के अतिरिक्त तकनीकी ज्ञान के बल पर साधारण स्तर के कर्मचारियों से लेकर उच्च वर्ग के अधिकारी तक भगवान विश्वकर्मा की सामूहिक पूजा अर्चना किये। अनेक स्थानों पर झांकियां भी निकाली गईं। इस अवसर पर बहुत से कार्यकर्ताओं ने मेधावी छात्रों को पुरस्कृत भी किया है। सरकार की ओर से कल-कारखानों में विश्वकर्मा जी की पूजा हेतु कार्यस्थल पर ही सामूहिक उत्सव को मान्यता प्रदान की है। सभी भारतीयों को भगवान विश्वकर्मा की पूजा के अवसर पर अपने पैतृक एवं परंपरागत कला कौशल का वैज्ञानिक स्तर पर स्मरण करना चाहिए। भगवान विश्वकर्मा द्वारा प्रदत्त ज्ञान के विस्तार से ही राष्ट्र के कल्याण का मार्ग प्रशस्त होता है, वे ही मानव कल्याण हेतु जगतगुरू हैं, राष्ट्र कल्याण हेतु विष्णु और शिव हैं तथा जन-जन तक पहुंचने में गणेश हैं।

जो पढ़े सो बढ़े

-मेवालाल विश्वकर्मा
अहरौरा, मिर्जापुर

सुख से जियो और जीने दो-

रद्दी समझ कर आपने फेंका था कल जिसे,

मुझको उसी किताब ने जीना सिखा दिया।

मनुष्य को संसार में रबर की गेंद की तरह रहना चाहिए। वह फुदकती रहती है, चिपकती नहीं। मिट्टी का लोदा नहीं बनना चाहिए कि जहां जाय वहां चिपक जाये। यही संसार में रहने की असली विधा है।

कोई कितना महान क्यों न हो, अंधे होकर उसके पीछे मत चलो (स्वामी विवेकानन्द)।

अपना अनुभव ही सच्चा गुरु व पथ प्रदर्शक है (पंडित नेहरू)।

लोग कहते हैं कि दुनिया का सबसे आसान काम है किसी के काम में दोष निकालना और शायद सबसे कठिन काम है स्वयं ही वैसा काम करके दिखाना। दूसरों को ऐसे करो वैसे करो कहना जितना आसान है, उतना ही कठिन है उसे ऐसे या वैसे करके दिखा देना। बड़ी बातें करना, लंबी-लंबी डींग हांकना तो मूर्ख से मूर्ख आदमी के बाएं हाथ का खेल है, लेकिन बड़े काम करने वाले तो बिरले होते हैं (सुभाषित)।

है वही सपूत इस जग में,जो अपनी राह बनाते हैं,

कुछ चलते पद चिन्हों पर, कुछ पदचिन्ह बनाते हैं।

जिस सभा में बड़े-बूढ़े नहीं, जो धर्म की बात न कहे वह बूढ़ा नहीं। जो कपट से पूर्ण हो वह सत्य नहीं, जिसमें सत्य नहीं वह धर्म नहीं।

जाति भाइयों के साथ परस्पर भोजन, बातचीत एवं प्रेम करना कर्तव्य है। उनके साथ विरोध नहीं करना चाहिये। मनुष्य को अपने ही वर्ग के लोगों से विशेष रूप से डरना व सावधान रहना चाहिए न कि शक्तिशाली विरोध पक्ष से (महर्षि विदुर)।

हम सभी लोग यही भूल करते हैं कि अपने दोषों को छुपा कर दूसरों पर दोषारोपण करते हैं (चाणक्य)।

मत छेड़ो खाने वाली थाली को-

भाषण को मजाक मत समझो। पुराने जमाने में जो ताकत मंत्र शक्ति में थी, वही आज भाषण शक्ति में है। कहावत भी है, भाषण के आगे भूत भागते हैं। भूत आगे-आगे भाषण पीछे-पीछे। भाषण भूत को खदेड़ता जाता है। जो भाषण भूत को खदेड़ सकता है, वह भ्रष्टाचारियों को भी खदेड़ सकता है। भाषण बंदूक है, भाषण तोप है, भाषण एटम बम है, भाषण को मामूली चीज मत समझना। यह भाषण शक्ति का ही कमाल है कि लोग भाषण देते-देते नेता बन जाते हैं।

भाषणबाजों से निवेदन-

दायित्वबोध के बिना भाषणबाजी करना कोरा बकवास होता है। यह सब अच्छा नहीं लगता कि आइये, माला पहनिये भाषण दीजिए और चले जाइये। यह स्रोतागण का मात्र दुरुपयोग ही नहीं अपितु हमारी व हम जैसे लोगों की व्यथा है। माननीय शीर्षजन से हमारी अपेक्षा है कि वह स्वयं करके दिखावें भी, तभी हमारी सार्थकता है।

हमें वक्त जब भी जिधर ले चलेगा, यकीनन उस ओर चलना पड़ेगा।

अगर वाकई रुख जमाने ने बदला, तो बेशक हमें भी बदलना पड़ेगा।।

यह अद्भुत संयोग है कि विश्वकर्मा पूजा तारीख 17 है तो सन भी 17 है। हमारा शताब्दी वर्ष प्रारंभ हो रहा है। इस पावन अवसर पर विचार करें, पूर्व शताब्दी वर्ष में हम क्या थे, क्या हो गये और आगामी शताब्दी वर्ष के लिए क्या होना चाहिये। राजनेता 5 वर्ष की सोचता है तो सामाजिक नेता 100 वर्ष की।

सूई से लो प्रेरणा, दो को करती एक (सामाजिक), कैंची से क्या सीखना जिसको नहीं विवेक (राजनीतिक)।

भगवान विश्वकर्मा-

विश्व के इतिहास में कोई ना अपना देश।

पर विश्व-कर्मा के नाम से विश्व हमारा देश।।

हिंदू, सिख, इसाई, मुसलमान।

सभी पूजते विश्वकर्मा भगवान।।

एकै साधे सब सधे, सब साधे सब जाय।

साध एकमेव विश्वकर्मा को सभी कष्ट मिट जाय।।

''आगामी शताब्दी वर्ष सामयिक, विकसित, मंगलकारी हो''

''एक बूढ़ा आदमी है मुल्क में या यूं कहें इस अंधेरी कोठरी में एक रोशनदान है''

गोत्र या जन्म से कोई ब्राह्मण नहीं होता। जिसमें सत्य है, जो ज्ञानी है तथा जो धर्माचरण से युक्त है वही ब्राह्मण है (महात्मा बुद्ध)।

पुजारी होने के लिए जाति नहीं योग्यता जरूरी है (सुप्रीम कोर्ट 14 फरवरी, 2003)।

उड़ान

हरेश्याम विश्वकर्मा, एडवोकेट

उड़ान एक कला है। यहां कला का तात्पर्य कौशल या ज्ञान है। ज्ञानचक्षु जब खुलते हैं तभी उड़ान संभव हो पाता है। जब कोई बिना विवेक उड़ने लगता है तब कहा जाता है देखो, पक्षी के पर निकल आये हैं। मूढ़मति होने से अच्छा है दिमाग पर जोर दिया जाय तब उड़ने का उपक्रम किया जाय। सद्बुद्धि एकाएक नहीं आती, इसे हासिल करना पड़ता है। कठोर परिश्रम के बाद कपाट खुलने शुरू होते हैं। किसी मजबूत दीवार को ढकेलने हेतु की गई एक आदमी की मेहनत सही कदम नहीं है। कार्य उचित दिशा में होना चाहिये, इसके लिए समुचित मार्गदर्शन की आवश्यकता है।

कार्यसिद्धि की सफलता हेतु सहज भाव से ज्ञानार्जन का विकल्प सदैव खुला रखना चाहिये। विवेक शून्य बनकर ही ज्ञानियों से कुछ हासिल किया जा सकता है। अपने ज्ञान के क्षेत्र को विकसित करने का सही तरीका यही हो सकता है। स्वयंभू बुद्धिजीवी बन जाने से ज्ञान का दायरा सीमित हो जाता है। व्यक्ति को आजीवन सीखने का प्रयत्न करना चाहिये। विवेक को विकसित करने की उम्र निर्धारित नहीं है। भौतिक शिक्षा मात्र से मस्तिष्क पूर्णरूपेण विकसित नहीं हो पाता है। इसमें आध्यात्मिकता का पुट होना भी जरूरी है। इसका मतलब यह नहीं है कि निराकार भाव को मानने वाला व्यक्ति आत्मिक नहीं हो सकता है। ऐसे लोग भी मन मस्तिष्क के समामेलन के माध्यम से उस दिशा में पहुंचकर पूर्णता प्राप्त कर सकते हैं और ज्ञान के द्वारा उड़ान भर सकते हैं।

ज्ञान चक्षु जब खुलते हैं तब सब कुछ साफ-साफ दिखाई देने लगता है। उजाले में जैसे आंखों की रोशनी बढ़ जाती है, अदृश्य भी दृश्य हो जाता है, उसी प्रकार ज्ञान प्राप्त हो जाने पर चीजें स्पष्ट होने लगती हैं। धुधलका मिटने लगता है और आत्मा दिमाग से तेज काम करने लगती है। उचित-अनुचित का भाव मस्तिष्क को समझ आने लगता है। ऐसी अवस्था में व्यक्ति के निर्णय सही होने लगते हैं। सही निष्कर्ष पर पहुंचकर लक्ष्य को गति देने में सरलता आ जाती है। उद्देश्य सही दिशा में होता है और व्यक्ति अपनी उड़ान को कामयाब बनाने में अग्रसर हो जाता है। जीवन को पहचान मिल जाती है। व्यक्ति गतिशील हो जाता है। उसमें उर्जा बहने लगती है। उर्जावान मनुष्य कुछ कर गुजरने को आतुर हो जाता है। वह उद्यमी बनकर मंजिल की तरफ बढ़ने लगता है। उसमें परिश्रम करने का साहस आ जाता है। यह साहस उसे धैर्यपूर्वक आगे बढ़ने में मददगार होता है। व्यक्ति का आत्मविश्वास बढ़ जाता है, डर की भावना जाती रहती है। उद्यमिता सार्थक हो जाती है, सार्थकता से कर्तव्यफल मिलता है। सोच दूरगामी बनती है। परिणाम स्वरुप मानव जीवन शनैः-शनैः सफलता को फलीभूत होता है।

"ज्ञान चक्षु जब खुलते हैं तब सब कुछ साफ-साफ दिखाई देने लगता है। उजाले में जैसे आंखों की रोशनी बढ़ जाती है, अदृश्य भी दृश्य हो जाता है, उसी प्रकार ज्ञान प्राप्त हो जाने पर चीजें स्पष्ट होने लगती हैं। धुधलका मिटने लगता है और आत्मा दिमाग से तेज काम करने लगती है। उचित-अनुचित का भाव मस्तिष्क को समझ आने लगता है। ऐसी अवस्था में व्यक्ति के निर्णय सही होने लगते हैं। सही निष्कर्ष पर पहुंचकर लक्ष्य को गति देने में सरलता आ जाती है।"

उड़ान की आवश्यकता हर जीव को है। जो उड़ने का प्रयास नहीं करता है वह धराशायी हो जाता है। फिर कुचला जाता है, दबाया जाता है और उसका वजूद मिटाने का प्रयास सदैव किया जाता रहा है। अस्तित्व विहीन मनुष्य इतिहास की विषय वस्तु बन जाता है। ऐसे व्यक्ति के इतिहास से भी कुछ भी सीखा नहीं जाता है। उसका जीवन अध्ययन व्यक्ति को रसातल की ओर ले जाता है। तय आपको करना है, 'आप जाना कहां चाहते हो।' उड़कर आसमान छू चुके व्यक्ति की जीवनी ही महत्वपूर्ण है। उसके त्याग, परिश्रम और सफलता की सीढ़ियां चढ़ने के मंत्र का अध्ययन ही आप को गतिशील बना सकता है। आप भी आसमान नापने का ख्याल अपने दिल में ला सकते हैं, एक जज्बा पैदा कर सकते हैं और नया इतिहास रचने में अपनी भूमिका का

अच्छी तरह निर्वहन कर सकते हैं। यह जरुरी नहीं कि आप आसमान पकड़ ही लें लेकिन अगर आप ऊपर चढ़ चुके तब कुचले जाने से मुक्ति अवश्य ही पा सकते हैं। याद रखिए निर्देश सदैव ऊपर से दिये जा सकते हैं।

उड़ान भरने के लिए विवेक की आवश्यकता सदैव नहीं हुआ करती। विवेक तर्क पर आधारित होता है। वह लॉजिक की मांग करता है। क्या सही है, क्या गलत है? उसमें उलझता है। ज्ञान तर्क की सीमा से परे है। ज्ञान पर विवेक हावी नहीं हो सकता। ज्ञानी मनुष्य पथ प्रदर्शक होता है, उसकी अपनी विचारधारा होती है। वह उस पर अडिग रहकर जीवन को सार्थक बनाता है। अपने साथ-साथ लोगों का भी कल्याण कर देता है। ऐसा मनुष्य समस्या नहीं उत्पन्न करता बल्कि समस्या का समाधान निकलता है। इसका यह तात्पर्य नहीं कि विवेकशून्य होकर कार्य किया जाये। जो ज्ञानी है, वह विवेकी भी होगा और विवेक का इस्तेमाल कर ही अपने लक्ष्य को क्रियान्वित करेगा। जिस प्रकार भाग्य और पुरुषार्थ एक दूसरे के पूरक हैं उसी तरह ज्ञान और विवेक एक दूसरे से सशक्त हैं। एक का अभाव दूसरे को अपूर्णता प्रदान करता है। यह जरुरी नहीं कि विवेकशील व्यक्ति ज्ञानी हो लेकिन ज्ञानी व्यक्ति अवश्य ही विवेकवान होता है। मेरी समझ यही कहती है। हो सकता है आप कुछ और समझ लें पर बिना ज्ञान के उड़ान असंभव है। जीवन की सार्थकता के लिए उड़ान जरुरी है तभी कुछ हो सकता है।

हरेश्याम विश्वकर्मा, एडवोकेट
सिविल कोर्ट, बस्ती।
मो0-8874574302

जब धर्म ही जहरखुरानी का काम करे

इस सृष्टि पर जन्म लेकर मनुष्य आस्था-अनास्था के जाल में फंस जाता है। आस्था यानी विश्वास, भरोसा, सहारा, आधार और अनास्था यानी अविश्वास, आधारहीन, बिना सहारा। वैसे मनुष्य में अनास्था तो हो ही नहीं सकती है। किसी न किसी रूप में किसी न किसी के प्रति आस्था स्वभावतः तो रखनी ही पड़ती है। भले ही आस्था-अनास्था, आस्तिक-नास्तिक की युगलबंदी मौजूद हो, वह मात्र कहने और बोलने के लिये है कि एक आस्तिक है और अगला नास्तिक।

दर्जनों नाम के धर्मः- इस सृष्टि पर जन्म लेकर मनुष्य इस आस्था और अनास्था के माध्यम से प्रचलित, तथाकथित धर्मों के मजहबों में मनुष्य बंट जाता है। प्रत्यक्ष अपने आंखों से कोई भी मनुष्य यह देख सकता है कि इस सृष्टि पर दर्जनों नाम के धर्म हैं जिनमें किसी एक का भी किसी अगले से तालमेल, सामंजस्य एवं समन्वय नहीं है। जिसका परिणाम है कि संसार में प्रचलित धर्म और मजहब इस संसार में धार्मिक आतंक एवं उन्माद पैदा किये हुये है, जो मनुष्य नहीं पूरी सृष्टि के लिए खतरनाक ही नहीं, विनाशकारी साबित हो रहे हैं। तमाम धर्मों के नाम पर पूरे विश्व में आतंक मचा हुआ है।

धर्म को हथियार के रूप मेंः- मौजूदा धर्मों के आपसी दुराव, भेद-भाव जो हैं वह तो हैं ही, कुछ एक में तो इस धर्म को हथियार के रूप में भी इस्तेमाल कर मनुष्य ही मनुष्य को गुलाम बनाये हुये हैं। जैसे हिंदू धर्म की सामाजिक वर्ण व्यवस्था पूरे भारत देश के निवासियों को 15-85 में बांटकर। आज 3-1/2 हजार वर्षों से 15 प्रतिशत स्थापित वर्ग 85 प्रतिशत विस्थापित वर्ग पर अपना शासन चला रहा है। देश में संविधान का कानून लागू हुए आज 68 वर्ष हो गये पर देश में शासक एवं शोषित वर्ग ज्यों का त्यों बना हुआ है।

धर्म का मजहबः- देश के संचालकों सहित देश की शेष आम जनता को भी यह सोचना समझना चाहिये कि देश में एक सच्चा, ईमानदार, निर्दोष, निर्मल के अतिरिक्त झूठ, पाखंड, अंधविश्वास रहित 'पवित्र धर्म' एवं धार्मिक सामाजिक व्यवस्था स्थापित हो जिसमें कम से कम अपने एक धर्म-मजहब के भीतर रहने वाले मनुष्य परस्पर प्रेम भाईचारा सद्भाव बिना भेदभाव, छुआछूत, झूठ, पाखंड, अंधविश्वास के रहकर अपने इस भूखण्ड भारत देश को स्वर्ग बना सके। धर्म का मजहब ही है, लोगों के बीच परस्पर प्रेम का संचार करना, मनुष्य से मनुष्य को जोड़ना, भले के लिए काम करना न कि तोड़ना, भेदभाव एवं नफरत पैदा करना। न कि ऊपर से झूठ, पाखंड निर्मित तीज-त्योहार के माध्यम से जनमानस के बीच जहरखुरानी का काम करना। जहां पूरा का पूरा हिंदू धर्म ग्रंथ सुर-असुरों, देवता-दानवों और भारतीय इतिहास आर्यों और अनार्यों के बीच हुये संघर्षों से भरा पड़ा है। वहां शोषित एवं शोषक वर्ग का होना, इनकी मौजूदगी कोई आश्चर्य की बात नहीं। जिसे आज भी हिंदू तीज-त्योहारों तथा हिंदू समाज में साक्षात देखा जा सकता है, यह सब बंद होना चाहिये। वर्तमान में तथाकथित धर्मों का आतंक तभी खत्म होगा जब मनुष्य सच्चे अर्थों में अपने-अपने तथाकथित धर्मों के 'धर्म' बनाएंगे वर्ना मौजूदा धर्म, 'धर्म' की टाइटिल पाने के हकदार नहीं हैं।

भारत देश में अधिकार से वंचित शोषित वर्ग जब तक जागेगा नहीं, राजनीति में अपना कब्जा नहीं जब जमायेगा, शोषक वर्ग विभिन्न राजनीतिक दलों के नाम से शोषितों पर अपना शासन चलता रहेगा। अफसोस एवं दुःख है कि हिन्दुत्व के जहरखुरानी के वजह/कारण बहुतायत शोषित वर्ग आज भी एक गहरी नींद में सो रहा है।

सृष्टि की उत्पत्ति

विराट विश्वकर्मा (आदि विश्वकर्मा)

चर-अचर जगत में प्राणिमात्र का सृजन एक अनंत प्रकाश पुंज द्वारा हुआ जिसे देवी भागवत में आदि शक्ति जगदम्बा कहा जाता है और शिवपुराण में आदिदेव अनादिदेव शिव के नाम से संबोधित किया गया है। वह प्रकाशपुंज आदि देवी जगदम्बा या आदि देव शंकर नहीं अपितु वो शिव अर्थात विराट विश्वकर्मा हैं। इस विषय में मेरा मत प्रमाणिक तौर पर निम्न प्रकार है।

विवेचना- जब भी निर्माण की बात आती है, निर्माण के देवता भगवान विश्वकर्मा को ही कहा जाता है। यदि वो प्रकाशपुंज भगवान शंकर या माता आदि शक्ति थीं तो उन्होंने सिर्फ ब्रह्मा, विष्णु व शंकर की उत्पत्ति की, यथानुसार उनको कार्य सौंप दिया एवं उनकी देवियों के रूप में माता लक्ष्मी,सरस्वती एवं पार्वती को बनाया। यहां तक बात समझ में आती है, परंतु जैसे आगे बढ़ते हैं जहां उस महाप्रलयकारी सुदर्शन तथा त्रिशूल का जिक्र आता है, जब उसके निर्माणकर्ता के बारे में पता करने की कोशिश करते हैं तब पता चलता है कि उपरोक्त अस्त्र बनाने का कार्य विश्वकर्मा जी ने किया था और त्रिशूल व सुदर्शन के निर्माणकर्ता भगवान श्री विश्वकर्मा ही हैं।

अब प्रश्न यहां उलझ जाता है कि आदि शक्ति, शिवशंकर या जगदम्बा ने सिर्फ 6 लोगों को ही बनाया। उन्हीं के द्वारा प्राणिमात्र का सृजन शुरू हुआ तो वो सुदर्शन जो भगवान विष्णु के हाथ में सुशोभित था वो कहाँ से आया? और प्रलयंकर त्रिशूल कहाँ से आया? अर्थात त्रिशूल और सुदर्शन या तो उस आदि शक्ति प्रकाश पुंज ने दिया या भगवान ब्रह्मा, विष्णु, महेश से पहले विश्वकर्मा की उत्पत्ति हो चुकी थी। परन्तु सभी धर्म प्रवर्तकों के अनुसार भगवान ब्रह्मा, विष्णु, महेश की उत्पत्ति आदिशक्ति जगदम्बा या आदि शिव ने किया था। उनके हाथों में सुशोभित प्रलयकारी त्रिशूल तथा सुदर्शन चक्र प्रदान किया। अब जब सुदर्शन और त्रिशूल विश्वकर्मा ने बनाया था और भगवान विष्णु एवं भगवान शंकर को दिया था तो इससे यह सिद्ध होता है कि वह आदि शक्ति प्रकाश पुंज विश्वकर्मा ही रहे होंगे।

अतः यह सिद्ध होता है कि प्राणिमात्र का सृजन आदिशक्ति विश्वकर्मा ने किया।

भगवान विश्वकर्मा ने ब्रह्मा की उत्पत्ति करके उन्हें प्राणि मात्र का सृजन करने का वरदान दिया और उनके द्वारा 84 लाख योनियों को उत्पन्न करवाया। विष्णु भगवान की उत्पत्ति कर उन्हें जगत में उत्पन्न सभी प्राणियों की रक्षा और भरण-पोषण का कार्य सौंप दिया और प्रजा का सुचारु रूप से पालन करने के लिये एक अत्यन्त शक्तिशाली तीव्रगामी सुदर्शन चक्र बनाकर प्रदान किया। संसार के प्रलय के लिये एक अत्यन्त दयालु बाबा 'भोलेनाथ' शंकर भगवान की उत्पत्ति की। उन्हें डमरू, कमण्डला, त्रिशूल आदि प्रदान कर उनके ललाट पर प्रलयकारी तीसरा नेत्र भी प्रदान कर उन्हें प्रलय की शक्ति देकर शक्तिशाली बनाया।

यथानुसार इनके साथ इनकी देवियां, खजाने की अधिपति मां लक्ष्मी, राग-रागिनी वाली वीणा वादिनी मां सरस्वती और मां गौरी को देकर देवों को सुशोभित किया। इस प्रकार संसार में अनेक योनियों को उत्पन्न,रक्षा,भरण-पोषण करने का कार्य सुचारू रूप से चलने लगा।

कई इतिहासकार या धर्मगुरू तोड़-मरोड़ कर स्वार्थपरक बनाकर सच्चाई से कोसों दूर उसकी विवेचना करते रहे हैं, परन्तु सच्चाई यही है।

राजनीश शर्मा मार्तण्ड
राष्ट्रीय महासचिव
विश्वकर्मा विकास एवं सुरक्षा समिति
मो0: 9455502007
9455080809

देव शिल्पी विश्वकर्मा ने किये थे ऐसे अद्भुत निर्माण

भगवान विश्वकर्मा

अक्सर हम भगवान विश्वकर्मा के बारे में सुनते तो रहते हैं लेकिन बहुत ही कम लोग इनके विषय में जानते हैं। हममें से शायद कुछ ही लोग होंगे जो वास्तव में यह जानते होंगे कि आखिर विश्वकर्मा को देव शिल्पी क्यों कहा गया?

विश्वकर्मा भगवान का परिचय

स्कंद पुराण के अन्तर्गत विश्वकर्मा भगवान का परिचय-

'बृहस्पते भगिनी भुवना ब्रह्मवादिनी, प्रभासस्य तस्य भार्या बसूनामष्टमस्य च। विश्वकर्मा सुतस्तस्य शिल्पकर्ता प्रजापति' श्लोक के जरिये मिलता है।

श्लोक का अर्थ- इस श्लोक का अर्थ है, महर्षि अंगिरा के ज्येष्ठ पुत्र बृहस्पति की बहन भुवना ब्रह्मविद्या की जानकार थी, उनका विवाह आठवें वसु महर्षि प्रभास के साथ संपन्न हुआ था। विश्वकर्मा इन दोनों की ही संतान थे।

ब्रह्मा जी का पुत्र- कहीं-कहीं भगवान विश्वकर्मा को ब्रह्मा जी का पुत्र भी कहा गया है। जिन्हें देवताओं का शिल्पी के रूप में जाना जाता है। इसके अलावा विश्वकर्मा भगवान को सभी शिल्पकारों और रचनाकारों का भी इष्ट देव माना जाता है।

ऋग्वेद- विश्वकर्मा भगवान को ब्रह्मांड का रचयिता भी माना जाता है, ऋग्वेद के अंतर्गत इन्हें सर्वश्रेष्ठ सत्य के तौर पर भी उल्लिखित किया गया है।

देव शिल्पी- चलिए जानते हैं कि भगवान विश्वकर्मा ने किन-किन स्थानों का निर्माण किया, जिनके आधार पर उन्हें देव शिल्पी की उपाधि प्राप्त हुई।

बाल्मीकि रामायण- बाल्मीकि रामायण के अनुसार रावण की सोने की खूबसूरत लंका का निर्माण भगवान विश्वकर्मा ने ही किया था।

माल्यवान, माली और सुमाली- पौराणिक दस्तावेजों के अनुसार माल्यवान, माली और सुमाली नामक तीन राक्षस भगवान विश्वकर्मा के पास गये और उनसे अपने लिए भव्य महल और राज्य का निर्माण करने के लिए कहा।

त्रिकुट पर्वत- तब विश्वकर्मा भगवान ने उन्हें बताया कि इन्द्र की आज्ञा पाकर उन्होंने ही त्रिकुट पर्वत पर बसी सोने की लंका का निर्माण किया था, तुम वहां जाकर रह सकते हो। इस तरह लंका पर राक्षसों का आधिपत्य स्थापित हो गया।

धन कुबेर- जबकि कुछ स्थानों पर यह पढ़ने को मिलता है कि रावण के सौतेले भाई, धन कुबेर के कहने पर ही विश्वकर्मा ने सोने की लंका का निर्माण किया था। इस लंका को बाद में धन कुबेर ने ही रावण को दे दिया था।

रामसेतु का निर्माण- जब रावण सीता का हरण कर अपने पुष्पक विमान पर बैठाकर उन्हें लंका से जाता है तब वहां तक पहुंचने के लिए भगवान राम की आज्ञा पाकर वानर सेना ने सागर पर पुल बांधा था।

नल- बाल्मीकि रामायण के अनुसार शिल्पकला में निपुण नल नामक वानर जो विश्वकर्मा का ही पुत्र था, ने रामसेतु का निर्माण किया था।

भगवान शिव के रथ का निर्माण- जिस रथ पर बैठकर महादेव ने विद्युन्माली, तारकाक्ष और कमलाक्ष का वध किया था, उस रथ का निर्माण करने वाले भगवान विश्वकर्मा ही थे।

सोने का रथ- महादेव का यह रथ सोने का था जिसके दाहिने चक्र में सूर्य और बाएं चाक्र में चंद्रमा विराजमान थे। इसके अलावा दाहिने पहिये में 12 और बाएं पहिए में 16 आरे थे।

द्वारिका नगरी का निर्माण- श्रीकृष्ण की द्वारिका नगरी का निर्माण करने वाले भी भगवान विश्वकर्मा ही थे। इस नगरी के आधार पर भगवान विश्वकर्मा ने अपनी वैज्ञानिक समझ की एक अद्भुत मिशाल पेश की थी। द्वारिका नगरी की लंबाई और चौड़ाई, दोनों ही 48 कोस की थी। वास्तुशास्त्र के अनुसार इस नगरी में भवन, सड़के, गलियों और चौराहों का निर्माण किया गया था।

देवताओं के शिल्पकार- देवताओं के शिल्पकार विश्वकर्मा को समर्पित विश्वकर्मा दिवस भी मनाये जाने की परंपरा है। दिवाली के अगले दिन बड़ी धूम-धाम से विश्वकर्मा दिवस मनाया जाता है और इस दिन सभी कारीगर अपने-अपने औजारों की पूजा करते हैं।

श्री विश्वकर्मा सेवा संघ

भगवान विश्वकर्मा का अपमान करना किसी सरकार का अधिकार नहीं

लखनऊ। उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायमूर्ति रवीन्द्र सिंह ने कहा कि किसी भी सरकार को भगवान का अपमान करने का अधिकार नहीं है। वर्तमान योगी सरकार ने पूर्व की सपा सरकार द्वारा घोषित विश्वकर्मा पूजा का सार्वजनिक अवकाश को निरस्त करना भगवान विश्वकर्मा के साथ ही उनके वंशजों का भी अपमान है। श्री सिंह ने अखिल भारतीय विश्वकर्मा शिल्पकार महासभा द्वारा विश्वैसरैया सभागार लखनऊ में आयोजित विश्वकर्मा पूजा समारोह को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित करते हुए उपरोक्त बातें कहीं।

उन्होंने कहा कि वह किसी व्यक्ति या सरकार के विरोधी नहीं, बल्कि उसके विचारधारा के विरोधी हैं। आज भगवान विश्वकर्मा पूजा मनाने के लिए उपस्थित लोगों के अंदर उत्साह तो है पर चेहरे पर मुस्कान नहीं है, लोगों की बाहों पर बंधी काली पट्टी सरकार के विरोध में लोगों के गुस्से का एहसास करा रही है।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि रघुनाथ प्रसाद रस्तोगी सेवानिवृत्त न्यायमूर्ति ने सामाजिक एकता पर जोर देते हुये विश्वकर्मा पूजा समारोह को बड़े पैमाने पर मनाने की बात कही। नेता विरोधी दल राम गोविन्द चौधरी ने कहा कि भगवान विश्वकर्मा निर्माण के देवता हैं। भगवान विश्वकर्मा पर साजिश करना अक्ष्म्य अपराध है। समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम पटेल ने कहा कि समाजवादी पार्टी की सरकार ने भगवान विश्वकर्मा का अवकाश घोषित किया था जिसे हिंदुत्व के नाम पर राजनीति करने वाली अहंकारी भाजपा सरकार ने निरस्त कर दिया। उन्होंने उपस्थित लोगों को भरोसा दिलाया कि भविष्य में सपा सरकार बनने पर पुनः विश्वकर्मा पूजा का सार्वजनिक अवकाश घोषित कर भगवान विश्वकर्मा व उनके वंशजों का सम्मान बढ़ाया जाएगा।

कार्यक्रम के आयोजक राम आसरे विश्वकर्मा ने कहा कि वर्तमान भाजपा सरकार द्वारा विश्वकर्मा भगवान और उनके वंशजों का अपमान किया गया और विश्वकर्मा भगवान को महापुरुष की श्रेणी में लाकर रख दिया गया जिसे विश्वकर्मा समाज कतई बर्दाश्त नही करेगा। सपा सरकार ने जो सम्मान और पहचान दिया था वह सम्मान भाजपा सरकार मिटा रही है, जिससे हमारा समाज इस अपमान से मर्माहत है। मुख्यमंत्री तथा राज्यपाल को ज्ञापन देने के बाद भी सरकार ने छुट्टी बहाल नहीं किया। विश्वकर्मा पूजा का सार्वजनिक अवकाश जब तक बहाल नहीं होगा तब तक हमारा संघर्ष जारी रहेगा।

कार्यक्रम का समापन करते हुये पूर्व न्यायमूर्ति हरिहर नाथ तिलहरी ने कहा कि शिल्पकार ही नहीं सभी पिछड़े वर्गों को एकजुट होकर भगवान विश्वकर्मा के सार्वजनिक अवकाश को घोषित कराने के लिए लामबंद होना चाहिये। कार्यक्रम का संचालन राजेश विश्वकर्मा ने किया।

कार्यक्रम में सर्वश्री राजपाल कश्यप एमएलसी, अच्छेलाल सोनी पूर्व मन्त्री, डा0 राम दुलार राजभर राज्यमंत्री, डा0 सी0पी0 शर्मा, ई0 विजेश शर्मा, शिवशंकर वर्मा, अच्छेलाल विश्वकर्मा, राकेश विश्वकर्मा, प्रदीप विश्वकर्मा, परशुराम विश्वकर्मा, सूरजबली विश्वकर्मा, हरेंद्र विश्वकर्मा, अरुणपाल शर्मा, बबलू विश्वकर्मा, भारत विश्वकर्मा, अनिल विश्वकर्मा, गब्बूलाल विश्वकर्मा, प्रेमनाथ विश्वकर्मा, मुकेश विश्वकर्मा, अखिलेश मोहन, दानकिशोर विश्वकर्मा, मीना विश्वकर्मा, रामभजन विश्वकर्मा, रवीन्द्र विश्वकर्मा आदि लोग उपस्थित रहे।

विश्वकर्मा पूजा दिवस पर निकाली बाइक रैली

अहमदाबाद। विश्वकर्मा युवा मित्र मंडल के बैनर तले विश्वकर्मा पूजा के अवसर पर बुजुर्गों का सम्मान किया गया, साथ ही 500 से ज्यादा युवाओं ने बाइक रैली निकाली। नरोड़ा स्थित जांगिड़ ब्राह्मण समाजवाडी से निकाली गई यह रैली 16 किलोमीटर का सफर कर साबरमती विश्वकर्मा मंदिर पहुंची। रैली का जगह-जगह पर स्वागत किया गया।

रैली के संयोजक आईआरएस दिनेश कुमार जांगिड़ ने बताया कि सम्मान समारोह में बुधराम शर्मा, सुरेंद्र शर्मा, रतन लाल जांगिड़, जोगाराम कुलरिया एवं मदनलाल जांगिड़ सहित 5 वरिष्ठ समाज सेवकों को 'विश्वकर्मा भूषण सम्मान' से सम्मानित किया गया। युवा मंडल के संरक्षक शशिकांत शर्मा ने मुख्य अतिथि अजमेर के उद्योगपति गोपाल चोयल एवं विशिष्ट अतिथि डिप्टी कमिश्नर चुनाराम सुथार, बाड़मेर के समाजसेवी हरीश जांगिड़, मुंबई के सामाजिक कार्यकर्ता संजय बुढ़ल का स्वागत किया। मित्र मंडल के अध्यक्ष सुरेश शर्मा ने बताया कि युवाओं को एकजुट करने के मकसद से बाइक रैली का आयोजन किया गया। जिसमें बाइकों पर 'जय विश्वकर्मा' के साथ केसरिया ध्वज लहराते हुए युवा शामिल हुये। सभी प्रतिभागियों ने एक ही रंग के कपड़े पहनकर रैली को और भव्यता प्रदान की। शर्मा हुंडई के मालिक सुरेंद्र शर्मा ने अपने उद्बोधन में कहा कि उन्होंने 7 वर्षों में पहली बार समाज की ऐसी भव्य विशाल एवं ऐतिहासिक रैली देखी है।

इस मौके पर समाज के अग्रणी महावीर जांगिड़, गोपाल चोयल, वेद प्रकाश जांगिड़, बंसीलाल जांगिड़ एवं विकास जांगिड़ ने युवाओं का मार्गदर्शन किया। उन्होंने कहा कि संगठन में ताकत होती है, युवाओं में उर्जा होती है। उनको सही दिशा और मार्ग दर्शन देने की जरूरत है। युवा अच्छे कार्यों में जुड़े और समाज के साथ ही देश की तरक्की में अपना योगदान दें।

डी0आर0 विश्वकर्मा को मिला है कई सम्मान

लखनऊ। सुल्तानपुर में जिला विकास अधिकारी के पद पर तैनात डॉ0 डी0आर0 विश्वकर्मा को अब तक कई सम्मान मिल चुका है। वह बहुत ही साहित्यिक व मिलनसार व्यक्तित्व हैं। जनपद फर्रूखाबाद से परियोजना निदेशक के पद से स्थानान्तरित डॉ0 डी0आर0 विश्वकर्मा ने 10 जुलाई 2017 को जिला विकास अधिकारी सुल्तानपुर का पदभार ग्रहण किया। वह मूलतः चन्दौली जनपद के निवासी हैं। काशी हिंदू विश्वविद्यालय से बीएससी (ऑनर्स) की डिग्री प्राप्त की है। वहीं से बी0एड0, एम0एड0, एम0ए0 (समाजशास्त्र) की उपाधि अर्जित कर शिक्षा में इलेक्ट्रॉनिक जनसंचार में डाक्ट्रेट भी किया है। डॉ0 विश्वकर्मा को शिक्षा संकाय काशी हिंदू विश्वविद्यालय ने वर्ष 2006 में 'युवा-विभूति' का पुरस्कार दिया है। उनके नाम से डॉ0 डी0आर0 विश्वकर्मा 'बेस्ट पेपर अवार्ड' भी शिक्षा संकाय में प्रदान किया जाता है। डॉ0 विश्वकर्मा को वर्ष 2013-14 के लिये पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी दीर्घकालीन साहित्य सेवा अवार्ड मिल चुका है, जिसमें उन्हें 51000/-रू0 पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र दिया गया था। वर्ष 2015-16 में हिंदी संस्थान उत्तर प्रदेश लखनऊ ने उनकी लिखित पुस्तक ''वाणी, वाणी प्रबंध एवं संप्रेषण'' पर बाबूराव विष्णु पराड़कर स्मृति सम्मान भी प्रदान किया गया है जिसमें उन्हें 50000/-रू0 पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया था। इसके पूर्व भी कई संस्थाओं ने ब्हुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ0 विश्वकर्मा

को अनेक पुरस्कारों से नवाजा है। जैसे हिंदी प्रोत्साहन निधि, औरैया, 'श्री कैलाश नारायण मद्य गौरव सम्मान' से पुरस्कृत किया गया है। वांग्ग विभा द्वारा इन्हें स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पंडित सुदर्शन लाल शुक्ल साहित्यिक सेवा अवार्ड एवं अभिव्यंजना साहित्यिक संस्था द्वारा इन्हें 'राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन' साहित्यिक सेवा सम्मान से विभूषित किया गया है।

अनेक शासकीय योजनाओं में भी डॉ0 विश्वकर्मा को समय समय पर पुरस्कार मिलते रहे हैं। पंचायतों के चुनाव को सकुशल संपन्न कराने हेतु वर्ष 2000 में तत्कालीन चुनाव आयुक्त डॉ0 यशपाल द्वारा उन्हें प्रशस्ति पत्र दिया जा चुका है। कला के क्षेत्र में भी इन्हें कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। लेखन, साहित्य एवं कला में इनकी अभिरुचि पुस्तकें ज्ञान लोक में अवतरित हो चुकी हैं।

प्रस्तुति- अजय विश्वकर्मा

17 सितम्बर भगवान विश्वकर्मा पूजा के दिन गुजरात में सरदार सरोवर डैम का उद्घाटन करने से पूर्व भगवान विश्वकर्मा का विधिवत पूजन-अर्चन करते हुये प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी। डैम का उद्घाटन करने के बाद सभा को सम्बोधित करने के दौरान प्रधानमन्त्री ने देशवासियों को भगवान विश्वकर्मा पूजा की शुभकामना दिया।

वास्तु दोष का निवारक है विश्वकर्मा मन्त्र

अनिल एस0 विश्वकर्मा

सनातन धर्म में भगवान विश्वकर्मा का सभी देवी-देवताओं में महत्वपूर्ण स्थान है। इनके स्मरण मात्र से ही जगत के सारे कार्य बड़े ही सहजता से पूर्ण हो जाते हैं। आदि काल से भगवान विश्वकर्मा निर्माण के देवता हैं। जब-जब आसुरी शक्तियां प्रबल हुई तब-तब अपनी दैवीय शक्ति से देवों को अस्त्र-शस्त्र से अभिवृद्धि कर असुरों का विनाश किया है। भगवान विश्वकर्मा के पांच पुत्र (मनु, मय, तवष्टा, शिल्पी और दैवज्ञ) भिन्न-भिन्न गुणों से प्रख्यात हैं। इनके कार्यों से विश्व कल्याण हेतु देवी-देवताओं सहित मानव जाति के लिए कल्याणकारी है।

भगवान विश्वकर्मा पूजन दिवस पर श्रद्धा पूर्वक विधि-विधान से पूजा करने से रोजगार में बृद्धि होती है। परिवारिक कलह दूर करने के लिये, रोजगार व नौकरी में बृद्धि के लिए भगवान विश्वकर्मा का पाठ नियमित रूप से करने से सारे कष्ट दूर हो जाते हैं। क्योंकि भगवान विश्वकर्मा वास्तुशास्त्र के शिल्पी हैं। वर्तमान काल में वास्तु दोष के कारण अनेक प्रकार की समस्याओं से मनुष्य ग्रस्त है। क्योंकि सही दिशा-निर्देश के अज्ञानता बस कल कारखाने, दफ्तर एवं मकानों में त्रुटियां होती हैं, इसलिये सभी उस स्थानों पर भगवान विश्वकर्मा की प्रतिमा स्थापित कर नित्य स्मरण करते रहना चाहिए जहां आपका कार्य क्षेत्र अथवा कार्य संचालन होता है। विश्वकर्मा पूजा जहाँ कहीं भी हो रहा है वहां सपरिवार शामिल होकर भगवान की आराधना करने से विशेष लाभ मिलता हैं।

यो नरो विश्वकमार्णं भक्तियुक्तेन चेतसा।

ध्यायति स सुखी भूत्वाप्राप्नोति महतांपदम।।

अर्थात, जो मनुष्य भक्ति पूर्वक भगवान विश्वकर्मा का स्मरण करता है वह सुखों को प्राप्त करता हुआ संसार मे बड़े पदों को प्राप्त करता है।

17 सितम्बर भगवान विश्वकर्मा पूजा के अवसर पर जमशेदपुर विश्वकर्मा समाज युवा मंच द्वारा 16 क्षेत्रीय इकाइयों के सहयोग से एक सार्वजनिक विश्वकर्मा मन्दिर में भगवान विश्वकर्मा की मूर्ति समर्पित किया गया। इस कार्य में सुजीत शर्मा, का योगदान महत्वपूर्ण रहा। इसमें अरूण ठाकुर, राम बिलाश शर्मा व अर्जुन शर्मा का भी योगदान सराहनीय रहा। इसके अतिरिक्त संस्था के लोगों ने विश्वकर्मा पूजा के मौके पर कुष्ठ आश्रम में जाकर कुष्ठ रोगियों के बीच फल वितरित किया व कुछ आर्थिक सहयोग भी किया।

विश्वकर्मा पूजा पर रेड ब्रिगेड जौनपुर ने चलाया जन जागृति अभियान

जौनपुर। श्री विश्वकर्मा चैरिटेबल ट्रस्ट रेड ब्रिगेड जौनपुर द्वारा 17 सितम्बर विश्वकर्मा पूजा के शुभ अवसर पर विश्वकर्मा जन जागृति अभियान चलाया गया जिसमें समाज को शिक्षा के प्रति और अपने अधिकारों के प्रति जागरूक किया गया। यह जागरूकता अभियान मड़ियाहूं तहसील गेट से प्रारम्भ हुआ, जो मडियाहूं विश्वकर्मा मंदिर होते हुए बंधवा विश्वकर्मा मंदिर के रास्ते मछलीशहर पूरा कस्बा तक चलाया गया। इस प्रकार का कार्यक्रम जनपद जौनपुर के इतिहास में पहली बार हुआ।

मडियाहूं, जलालपुर, रामपुर, औरा, बरसठी, मियांचक, बंधवा विश्वकर्मा मंदिर होते हुए मछलीशहर कस्बे व उक्त रास्ते में पड़ने वाले उन तमाम विश्वकर्मा परिवार व विश्वकर्मा मंदिरों तथा प्रतिष्ठानों पर रेड ब्रिगेड टीम ने अपनी उपस्थिति सैकड़ो की संख्या में दी। इस प्रयास को देख सभी लोग प्रसन्न हुये, यह भी कहा कि मेरी जिंदगी का यह पहला पूजा है जिसमें विश्वकर्मा समाज के किसी संगठन ने इतनी अधिक संख्या में किसी के यहां विश्वकर्मा पूजा में सम्मलित हुआ हो।

इस जन जागृति, विश्वकर्मा सद्भावना मिलन अभियान में पूरे 8 घण्टे लगे और 60 किलो मीटर से ज्यादा दूरी तय की। जन जागरण कार्यक्रम का नेतृत्व जौनपुर रेड ब्रिगेड के अध्यक्ष राजेश विश्वकर्मा द्वारा किया गया, जिसका भरपूर सहयोग रेड ब्रिगेड के साथियों ने दिया। कार्यक्रम में डॉ रविन्द्र प्रताप विश्वकर्मा, राकेश विश्वकर्मा, कृष्ण चंद्र विश्वकर्मा, कृष्ण कुमार विश्वकर्मा, भानु प्रकाश विश्वकर्मा, दयाशंकर विश्वकर्मा, राम आशीष विश्वकर्मा, फूलचंद्र विश्वकर्मा, पंकज विश्वकर्मा, अशोक विश्वकर्मा, दीपक विश्वकर्मा, विनय विश्वकर्मा, ऋतुकांत विश्वकर्मा, आशीष रामपुर, मनोज विश्वकर्मा, राहुल विश्वकर्मा, राजेश विश्वकर्मा, सुरेन्द्र विश्वकर्मा, आशीष विश्वकर्मा, शिव कुमार विश्वकर्मा, महेंद्र विश्वकर्मा, गामा विश्वकर्मा सहित सैकड़ो की संख्या में विश्वकर्मा समाज के लोग व रेड ब्रिगेड के कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

विश्वकर्मा पूजा पर रेड ब्रिगेड मुम्बई ने चलाया जन जागृति अभियान

मुम्बई। 17 सितम्बर प्रभु विश्वकर्मा पूजन पर्व के शुभ अवसर पर श्री विश्वकर्मा चैरिटेबल ट्रस्ट (रेड ब्रिगेड) मुम्बई द्वारा 'विश्वकर्मा जन जागृति अभियान' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सामाजिक जागृति के उद्देश्य से आयोजित किये गए इस कार्यक्रम में सामाजिक सौहार्द बनाये रखने के लिए प्रभु विश्वकर्मा चित्र झांकी, प्रभु विश्वकर्मा मंत्रोच्चारण व हवन, अभियान के दौरान प्रसाद वितरण तथा विभिन्न प्रकार के प्रशासनिक संदेशों को सम्मिलित किया गया।

यह जन जागृति अभियान रथ विश्वकर्मा मंदिर कोपेरखैराने, नवी मुंबई से शुरू होकर घणसोली, रबाले, ऐरोली, दीघा, कलवा, कापुरवाड़ी, घोडबंदर रोड, कशिमिरा, दहिसर, बोरीवली, कांदिवली, मलाड, गोरेगांव, जोगेश्वरी होते हुए अंधेरी विश्वकर्मा मंदिर पर पहुची। अंधेरी विश्वकर्मा मंदिर पर स्थानीय संस्था 'भारतीय श्री विश्वकर्मा कल्याण मंडल' के सहयोग से सांध्यबेला पर पूणार्हुति स्वरुप हवन और आरती का कार्यक्रम किया गया, तत्पश्चात जन जागृति अभियान रथ विलेपार्ले, सांताक्रूज, बांद्रा, बीकेसी होते हुए 'श्री विश्वकर्मा कल्याण मंडल' कुर्ला पहुंची। रेड ब्रिगेड की टीम ने कुर्ला के कार्यक्रम में सहभागी होकर महाप्रसाद ग्रहण किया।

जन जागृति अभियान को सफल बनाने हेतु नवी मुंबई, मुंबई तथा

ठाणे से शामिल सभी सदस्यों का आभार व्यक्त कर कार्यक्रम के समापन की घोषणा की गयी।

इस अभियान में ज्ञानी विश्वकर्मा (नवी मुंबई, प्रभारी- रेड ब्रिगेड) के द्वारा जन जागृति अभियान में सम्मिलित सभी सदस्यों के लिए दोपहर के अल्पहार की व्यवस्था, इन्द्रजीत शर्मा, डोम्बिवली द्वारा प्रसाद के लिए बूंदी की व्यवस्था, भारतीय श्री विश्वकर्मा कल्याण मंडल, अंधेरी द्वारा पूणार्हुति के लिए हवन की और शाम के खाने की व्यवस्था, श्री विश्वकर्मा कल्याण मंडल, कुर्ला द्वारा जन जागृति अभियान में सम्मिलित सभी सदस्यों के लिए रात्रि में महाप्रसाद की व्यवस्था की गई थी।

सर्वश्री कृष्ण प्रसाद विश्वकर्मा, अनिल विश्वकर्मा, रवि विश्वकर्मा, रवीन्द्र विश्वकर्मा, अनिल विश्वकर्मा, कैलाश विश्वकर्मा, ज्ञानी विश्वकर्मा सहित रेड ब्रिगेड के सभी पदाधिकारियों ने जागृति अभियान में महत्वपूर्ण भमिका निभाई।

विश्वकर्मा पूजा पर हुआ विश्वकर्मा ज्ञान ग्रन्थ का अनावरण

नाशिक। 17 सितम्बर को श्री विश्वकर्मा पूजन दिवस पूरे भारत वर्ष में बड़े जोर शोर से मनाया जाता है। विश्वकर्मा वंशीय समाज संघटन, महाराष्ट्र राज्य के माध्यम से नागोराव पांचाल की अगुवाई में पिछले तीन साल से 'प्रभु विश्वकर्मा प्रकटस्थान' श्रीक्षेत्र वेरूल (विलोडगड) औरंगाबाद, महाराष्ट्र में भी 17 सितम्बर को श्री विश्वकर्मा पूजन दिवस मनाया जाता है। इस वर्ष समाज उपयोगी कार्यक्रम के साथ 'श्री विश्वकर्मा पूजन दिवस' बड़े धूमधाम से मनाया गया।

समाजसेवी राजेन्द्र भालेराव (विश्वकर्मा) के संकल्पनानुसार इस साल पांच 'विश्वकर्मा आचार्य' अमरदास बापू बनारस, अभयदास महाराज गुजरात, आचार्य जगदीश गुरू जी उज्जैन, अद्वैत चैतन्य महाराज महाराष्ट्र, हर्षानंदगिरी महाराज त्र्यंबकेश्वर,नाशिक की उपस्थिती और कर कमलों द्वारा 'विश्वकर्मा धर्मध्वजारोहण' करके कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। तद उपरांत 'पुरातन श्री विश्वकर्मा मंदिर से नूतन गुजराती विश्वकर्मा मंदिर' तक पूरे महाराष्ट्र से आये समाज बंधु/भगिनियों का 'विश्वकर्मा महिला ढोलपथक' की अगुवाई मे बड़ा जुलूस निकाला गया।

तत्पश्चात बांसुरी वादक निलेश बुंदे, गायक उमेश सुतार, तबला वादक विष्णु जी सुर्यवंशी द्वारा भजन/कीर्तन की प्रस्तुति की गई।

उपाध्यक्ष बालाजी खर्डे ने प्रस्तावना रखी। कार्यक्रम की गरिमा से प्रभावित होकर आचार्य अभयदास महाराज ने भी विश्वकर्मा भजन गाया। इस पवित्र पावन अवसर पर तीन 'विश्वकर्मा ज्ञान ग्रंथों' का और 'Vvss Youtube Channel' का अनावरण किया गया। अधिक जानकारी देते हुए राजेन्द्र भालेराव ने बताया की इस कार्यक्रम के माध्यम से समाज को आर्थिक/ शैक्षणिक/ व्यवसायिक/ सामाजिक उन्नत बनाना प्रथम लक्ष्य है।

सभा को संबोधित करते हुए नागोराव जी पांचाल ने कहा कि विश्वकर्मा वंशीय समाज के विकास के लिए मैं अपना पूरा जीवन समर्पित करता हूं। महाराष्ट्र शासन की ओर से प्रस्तावित 'विश्वकर्मा उत्थान योजना' में विश्वकर्मा समाज के प्रतिनिधि हों ताकि इस योजना का सीधा लाभ योग्य व सही व्यक्ति को मिल सके। अगर ऐसा नहीं हुआ तो विरोध प्रदर्शन किया जायेगा।

कार्यक्रम को यशस्वी बनाने के लिए विवेक सुतार, अरूण भालेकर, गणेश गव्हाणे, संजय बोराडे, संजय दीक्षित, विशाल जवरकर, देविदास पांचाल, योगेश विरोलकर आदि समाजसेवियों ने विशेष परिश्रम किया।

धूमधाम से मनाया विश्वकर्मा पूजा

रांची। पंचमुखी विश्वकर्मा पूजा समिति के तत्वाधान मे प्रत्येक वर्ष कि भांति इस वर्ष भी पंचमुखी भगवान विश्वकर्मा का भव्य पूजा का आयोजन किया गया। पूजा पाण्डाल का उद्घघाटन पूर्व विधायक लक्ष्मण स्वार्णकार ने किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व केन्द्रीय मंत्री सुबोधकांत सहाय थे। विशिष्ट अतिथि झारखंड राज्य महिला आयोग की पूर्व अध्यक्षा महुआ मांझी थी। इनके अलावा कई गणमान्य व्यक्ति भी कार्यक्रम मे शरीक हुये।

इस अवसर पर महाआरती का आयोजन किया गया जिसमें सैकड़ो महिलाओं के द्वारा भगवान विश्वकर्मा जी का महाआरती किया गया एंव महाभोग का प्रसाद वितरण भी किया गया। इस शुभ अवसर पर भक्ति संगीत का जागरण का भी आयोजन किया गया। समाज की गायिका खुशबू शर्मा, दलजीत सिंह दीवाना ने भक्ति संगीत में लोगो को खूब झुमाया। पूजा कार्यक्रम की अध्यक्षता दिनेश प्रजापति ने किया तथा संचालन मुख्य पूजा प्रभारी विक्रांत विश्वकर्मा ने किया। अतिथियों का स्वागत महासचिव राकेश कुमार शर्मा एवं पदाधिकारीयो ने किया। धन्यवाद ज्ञापन महासचिव राकेश कुमार शर्मा ने किया।

कार्यक्रम को सफल बनाने मे महेश विश्वकर्मा, रमेश मिस्त्री, मनोज विश्वकर्मा, उदय कुमार, विद्यानंद विद्यार्थी, अजय कुमार शर्मा, निरंजन शर्मा, प्रदीप विश्वकर्मा, अवधेश कुमार, ईश्वर दयाल पंडित, रमेश पंडित, मनोज शर्मा, दिलीप सोनी, नीरज प्रजापति, विनोद शर्मा, संतोष कुमार, विकास कुमार सहित अन्य सदस्यों का सहयोग रहा। इस अवसर पर बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

लोनी में धूमधाम से मनाया विश्वकर्मा पूजा

दीपक विश्वकर्मा

लोनी। 17 सितम्बर को श्री विश्वकर्मा सेवा संघ द्वारा आयोजित श्री विश्वकर्मा पूजा समारोह बड़े धूमधाम से मनाया गया। पूजा समारोह के मुख्य अतिथि डॉ0 प्रमेन्द्र कुमार विश्वकर्मा (सदस्य- राष्ट्रीय परिषद, भाजपा) रहे। अन्य अतिथि के रूप में विधायक नंदकिशोर गुज्जर, मीना शर्मा पूर्व जिला मंत्री एवं विधानसभा प्रभारी, सुदेश भारद्वाज मण्डल अध्यक्ष उपस्थित रहे। विनोद नगर सभासद वार्ड-23 की ओर से विकास को लेकर चर्चा हुई तो विधायक नंदकिशोर गुज्जर ने 25 फुटा मार्ग की हालत को देखकर जल्द ही उस पर विकास कार्य शुरू करने को कहा।

विश्वकर्मा पूजा के अवसर पर बुजुर्गों का सम्मान

भिलाई। श्री विश्वकर्मा समाज कल्याण केन्द्र के तत्वाधान में श्री विश्वकर्मा पूजा का आयोजन सड़क-2, सेक्टर-2, (परशुराम भवन के पीछे) किया गया। भगवान श्री विश्वकर्मा जी की 6 फीट की भव्य मूर्ति की स्थापना कर धूमधाम से पूजा किया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ भगवान श्री विश्वकर्मा जी की आरती गान से प्रारम्भ किया गया। समाज के वरिष्ठ, महिला और युवा पदाधिकारियों ने मंचस्थ अतिथि रिकेश सेन (नेता प्रतिपक्ष, नगर निगम भिलाई), विशिष्टि अतिथि निशिकांत शर्मा, हरीराम शर्मा, अजय शर्मा, सुशील शर्मा (संरक्षक) का पुष्पगुच्छ एवं पुष्पाहार से स्वागत किया। इस दौरान समाज के बुजुर्ग कुसुम विश्वकर्मा, राजनारायण शर्मा, राजेंद्र शर्मा, राम दुलार शर्मा, ऊषा शांडिल्य, सरोजनी विश्वकर्मा, अस्तुनी देवी शर्मा, लक्ष्मी शर्मा, पातीपति शर्मा, लक्ष्मी विश्वकर्मा, एन0के0 विश्वकर्मा, चम्पा देवी विश्वकर्मा, शांति शर्मा का शॉल श्रीफल से सम्मान किया गया। मंच का संचालन सुचित्रा शर्मा ने किया।

समाज के संरक्षक अतुल विश्वकर्मा एवं अजय शर्मा की तरफ से बुजुर्गों के लिए शॉल श्रीफल एवं श्री विश्वकर्मा भगवान की प्रतिमा हेतु सहयोग राशि प्रदान की गयी। संरक्षक निशिकांत शर्मा ने सामाजिक बंधुओं को अपने खर्चे से सिरडी से साईं बाबा का दर्शन करवाने का आह्वान किया। इसके लिए सभी सदस्यों को 251/-रू0 का संस्था का पर्ची लेना अनिवार्य होगा।

समाज के अध्यक्ष सुबास शर्मा ने अध्यक्षीय भाषण में समाज के सभी महिला, युवा, वरिष्ठ पदाधिकारियों और मंचस्थ अतिथियों का पूजा दिवस के आगमन पर स्वागत एवं हार्दिक बधाई दी। महासचिव प्रवीण चंद्र शर्मा ने अपने प्रतिवेदन के माध्यम से समाज की समस्या को बताया और कहा कि समाज को तेजी से विकास करना है तो समय के अनुसार समाज के एक-एक सदस्यों को चलना होगा। समाज के कार्यकर्ता अपने घर का काम त्याग कर समाज में अपनी सेवाएं देते हैं, उनकी मेहनत को समझते हुए समाज के लोग अपनी जिम्मेदारी समझें और समाज को एकजुट रहने से ही सामाजिक समस्या का निदान हो सकता है।

मुख्य अतिथि रिकेश सेन ने कहा कि विश्वकर्मा समाज का आज से मैं भी सदस्य बन चुका हूं। समाज को भूमि चाहिए तो मिलकर दिल्ली जाना होगा और इस्पात मंत्री से मिलकर अपनी समस्या रखनी होगी। समाज में एकजुटता बनाये रखें बड़ी से बड़ी समस्या का निदान होगा। मैं समाज से सभी बुजुर्गों और स्वजातीय बंधुओं को विश्वकर्मा पूजा की बहुत बहुत बधाई देता हूं।

कार्यक्रम के अंत में युवा बसंत शर्मा ने मंचस्थ अतिथियों एवं सैकड़ो की तादात में उपस्थित स्वजातीय बंधुओं का आभार प्रदर्शन किया। आये हुये सभी अतिथियों का भी संस्था की तरफ से सम्मान किया गया।

विश्वकर्मा पूजा दिवस के अवसर पर ईश्वर दयाल शर्मा, नंदकिशोर शर्मा, पारस नाथ शर्मा, टी0एन0 शर्मा, दरोगा शर्मा, अनिरुद्ध विश्वकर्मा, विजय विश्वकर्मा, श्याम शर्मा, संतोष शर्मा, सुरेंद्र शर्मा, जयराम शर्मा, उपेंद्र विश्वकर्मा, संतोष विश्वकर्मा, दीपक विश्वकर्मा, उमेश विश्वकर्मा, कांतिलाल विश्वकर्मा, विमला शर्मा, रीना विश्वकर्मा, रीता शर्मा, संजना सांडिल्य, आरती शर्मा, संगीता विश्वकर्मा, रेनू विश्वकर्मा, सुनीता शर्मा, छाया विश्वकर्मा, अनीता शर्मा, शालू विश्वकर्मा, सुनीता विश्वकर्मा, तारा शर्मा (महिला प्रकोष्ठ), अंकित शर्मा, बसंत शर्मा, अरविन्द शर्मा, आनद शर्मा, मोहन शर्मा, सनी शर्मा, अशोक विश्वकर्मा, अरुण विश्वकर्मा, सागर शर्मा, कृष्णा विश्वकर्मा, ध्यानचंद विश्वकर्मा, रामकुमार शर्मा, अक्षय लाल शर्मा, सावन विश्वकर्मा, राजकुमार शर्मा, राकेश शर्मा, प्रदीप विश्वकर्मा, नीलेश शर्मा, नवीन विश्वकर्मा, नवीन शर्मा, प्रफुल्ल विश्वकर्मा (युवा प्रकोष्ठ) एवं सैकड़ो की तादात में स्वजातीय बंधु उपस्थित रहे।

विश्वकर्मा पूजा के अवसर पर किया वृक्षारोपण

नाशिक। 17 सितम्बर प्रभु विश्वकर्मा पूजन पर्व के शुभ अवसर पर श्री विश्वकर्मा चैरिटेबल ट्रस्ट (रेड ब्रिगेड) नाशिक द्वारा 'पेड़ लगाओ-पेड़ बचाओ' अभियान के तहत वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। वृक्षारोपण का यह कार्यक्रम औरों के द्वारा आयोजित वृक्षारोपण से थोड़ा अलग था।

जिस जगह पर वृक्षारोपण का कार्यक्रम करना था, उस जगह को एक सप्ताह पूर्व ही दत्तक लेकर, मशीनों की सहायता से उसे वृक्षारोपण लायक बनाया गया। पहले उस जगह को स्थानीय लोगों के घर से निकले कूड़े को फेंकने के लिए उपयोग किया जाता था, लेकिन भिन्न सोच रखने वाली रेड ब्रिगेड टीम ने स्थानीय प्रशासनिक सहायता से वृक्षारोपण कर उस जगह को आज एक बड़े उद्यान में परिवर्तित कर दिया है। इसके साथ ही इस उद्यान की देखरेख की पूर्ण जिम्मेदारी रेड ब्रिगेड ने ले ली है। उद्यान की देखरेख जिम्मेदारी में प्रत्येक सप्ताह पौधों को खाद-पानी देना, उद्यान को सदैव साफ रखना, उसे स्थानीय लोगों के उपयोग हेतु और सुन्दर बनाना इत्यादि शामिल है।

इस कार्यक्रम में स्थानीय प्रभाग के नगर सेवक श्याम बडोदे, सचिन कुलकर्णी, सुनील खोडे, सतीश सोनावने और पर्यावरण प्रेमी शंकर गायकवाड़ मुख्य रूप से उपस्थित थे। पर्यावरण प्रेमी शंकर गायकवाड़ के मार्गदर्शन में सभी पौधों का वृक्षारोपण संम्पन्न हुआ और सभी अतिथियों ने रेड ब्रिगेड के द्वारा किये हुए कार्यों की प्रशंसा करते हुए भविष्य में ऐसे ही कार्यक्रमों को करने की शुभेच्छा दी। इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए रेड ब्रिगेड टीम के राष्ट्रीय सलाहकार श्याम विश्वकर्मा, जिला अध्यक्ष अशोक विश्वकर्मा, जिला कोषाध्यक्ष अरविन्द विश्वकर्मा तथा जिला सचिव कृष्णचंद्र विश्वकर्मा के साथ नाशिक की पूरी टीम उपस्थित रही।

भाजपा प्रदेश मुख्यालय पर आयोजित हुई भगवान विश्वकर्मा की पूजा

लखनऊ। भगवान विश्वकर्मा पूजा के अवसर पर भारतीय जनता पार्टी प्रदेश मुख्यालय परिसर में भगवान विश्वकर्मा का विधिवत पूजन उत्सव का कार्यक्रम सम्मन्न हुआ। शिल्पदेव के रूप में माने जाने वाले भगवान विश्वकर्मा के पूजनोत्सव पर परिसर में स्थिति उपकरणों की पूजा एवं आराधना की गई। उक्त अवसर पर मुख्यालय प्रभारी भारत दीक्षित, सह प्रभारी चैधरी लक्ष्मण सिंह, अतुल अवस्थी के साथ अन्य भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

विश्वकर्मा पूजा पर निकाली झांकी, प्रतिभाओं का सम्मान

कानपुर देहात। विश्वकर्मा पूजा के अवसर पर पटेल चौक पुखरायां में अखिल भारतीय विश्वकर्मा शिल्पकार महासभा द्वारा विशाल शोभायात्रा का आयोजन किया गया। इस दौरान भोगनीपुर भाजपा विधायक विनोद कटियार ने पूजन कर शोभायात्रा की शुरूआत की। विश्वकर्मा पूजा के अवसर पर पटेल चौक पुखरायां में देव शिल्पी भगवान विश्वकर्मा का पूजन करते हुए भाजपा विधायक विनोद कटियार ने कहा कि भगवान विश्वकर्मा को देवताओं की उपाधि प्राप्त है। उन्होंने कहा कि व्यापारिक व निर्माण कार्य के क्षेत्र में भगवान विश्वकर्मा का विशेष महत्व है। श्री कटियार ने पूजन के पश्चात शोभा यात्रा की शुरूआत की। इस दौरान शोभायात्रा का जगह-जगह स्वागत किया गया। शोभायात्रा में कस्बा तथा आसपास के हजारों लोग शामिल रहे। शोभायात्रा का भोगनीपुर नहर कोठी स्थित राम अवतार शर्मा इंजीनियरिंग में समापन हुआ। यहां पर आयोजित हुए कार्यक्रम में मनीष पागल जागरण मंडल के सुनील राकी सहित अन्य कलाकारों को प्रतीक चिन्ह भेंटकर कार्यक्रम संयोजक रामअवतार विश्वकर्मा द्वारा सम्मानित किया गया। यहां पर रात्रि समय मनीष पागल जागरण मंडल के कलाकारों द्वारा भगवान विश्वकर्मा के जीवन पर कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

इस दौरान प्रदेश सचिव छोटे सिंह विश्वकर्मा, जिला संगठन मंत्री इन्द्र कुमार शर्मा, महामंत्री जीतू विश्वकर्मा, जिला उपाध्यक्ष अभय विश्वकर्मा, जिला उपाध्यक्ष नारायण विश्वकर्मा आदि लोग मौजूद रहे। कार्यक्रम के समापन पर प्रसाद वितरण किया गया।

भवन निर्माण विश्वकर्मा सेवा समिति लखनऊ द्वारा विश्वकर्मा पूजा के अवसर पर प्रतिभावान छोटे-छोटे बच्चों को सम्मानित कर उनका उत्साह बढ़ाया गया।

बिहार के सारण जिले में विश्वकर्मा समाज छपरा द्वारा विश्वकर्मा पूजा का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर सामाजिक बन्धुओं ने एकजुटता का संदेश दिया।

शिक्षा समाज की उन्नत की पहली सीढ़ी है

जालोर। विश्वकर्मा विकास संस्थान एवं अखिल भारतीय विश्वकर्मा छात्र संघ जालोर के तत्वाधान में जिला स्तरीय विश्वकर्मा समाज प्रतिभावान छात्र एवं युवा सम्मान समारोह हुआ। समारोह का आगाज भगवान विश्वकर्मा की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि न्यायाधीश मनसा राम सुथार ने कहा कि मस्तिष्क को विकसित करने का महत्वपूर्ण माध्यम शिक्षा है। शिक्षा समाज की उन्नति की पहली सीढ़ी होती है। बालिका शिक्षा की अति आवश्यकता है, एक सभ्य सुसंस्कृत समाज की रचना के लिए नारी शिक्षा एक महत्वपूर्ण आधार होती है। नारी समाज का आदर्श होती है।

समारोह की अध्यक्षता कर रहे आईएएस चुनाराम सुथार ने कहा कि युवा शक्ति अवतरित होने पर समाज में परिवर्तन आता है। समाज सही दिशा में आगे बढ़ता है, युवा वर्ग ने राष्ट्र ही नहीं वरन अंतर्राष्ट्रीय जगत में भी अपना गौरव बढ़ाया है। कांग्रेस प्रदेश महासचिव पुखराज पाराशर ने कहा कि युवा शक्ति, जिनका नाम लेते ही सीना गर्व से फूल जाता है, मुर्दे में भी जान आ जाती है। युवा ही वह वीर हैं जिन्होंने मातृभूमि तथा राष्ट्र को उन्नति की तरफ अग्रसर किया। हम प्रगति को देखकर फूले नहीं समा रहे हैं। आईएएस अशोक सुथार ने कहा कि आधुनिक संसाधनों, मशीनों आदि का उपयोग करें। मांग के अनुरूप जहां तक संभव हो बंधुओं को साथ लेकर कार्य करें ताकि समाज के लोग सक्षम और मजबूत होकर आर्थिक

रुप से समृद्ध हो सकें। मोहन पाराशर ने कहा कि समाज के हित में धनवान एवं ज्ञानवान को मिलकर प्रतिभावान और जरुरतमंद को सहायता एवं उचित मार्गदर्शन देकर समाज को सही दिशा में ले जाने के लिए तैयार होना है।

समाज की कोई भी प्रतिभा कुंठित ना हो तो निश्चित ही हमारी आने वाली पीढ़ी को समाज की एक नई तस्वीर मिलेगी। अखिल भारतीय विश्वकर्मा छात्र संघ के अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार मनोहर सुथार ने कहा कि सामाजिक कुरीतियों को मिलकर मिटाना होगा। अखिल भारतीय विश्वकर्मा छात्र संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ0 ओम प्रकाश लेखराव, प्रदेश संयोजक रतन सुथार, संयोजक छगन सुथार, राम गोपाल सुथार सहित कई वक्ताओं ने समारोह को संबोधित किया। मंच का संचालन मीठा लाल जांगिड़ भीनमाल ने किया। इस अवसर पर प्रदीप माकड़, भंवरलाल सुथार, छगनलाल सुथार, नवाराम सुथार, बाबूलाल, प्रेमसुख शर्मा आदि समाजबंधु उपस्थित थे।

समाज की ओर से आगामी समय में छात्रावास बनाने के लिए प्रस्तावित जमीन पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जहां आगामी समय में जिला मुख्यालय पर समाज के विद्यार्थियों के अध्ययन की सुविधा के लिए छात्रावास का निर्माण करवाया जाएगा।

विश्वकर्मा पूजा पर उरई में निकाली झांकी

उरई। विश्वकर्मा पूजा के अवसर पर जालौन जिला मुख्यालय उरई नगर में अखिल भारतीय विश्वकर्मा शिल्पकार महासभा के तत्वावधान में एवं मैकेनिक संघ तथा समाज सेवा समिति के सहयोग से भगवान विश्वकर्मा की भव्य शोभायात्रा निकाली गई। शोभा यात्रा के दौरान विश्वकर्मा समाज के लोगों ने काली पट्टी बांधकर विश्वकर्मा पूजा दिवस की छुट्टी निरस्त करने के विरोध में आहट होने का संदेश दिया।

देवशिल्पी एवं श्रृष्टि के निर्माता भगवान विश्वकर्मा की भव्य शोभायात्रा दोपहर 12 बजे कोंच रोड स्थित चच्चा की समाधि स्थल के सामने से प्रारम्भ हुई। शोभायात्रा को मैकैनिक संघ के अध्यक्ष हलीम मिस्त्री एवं महासभा के संरक्षक अवधबिहारी तथा रामलक्ष्मण के अलावा समाजावादी पार्टी के जिलाध्यक्ष वीरपाल सिंह यादव एवं श्रम प्रवर्तन अधिकारी उरई नीलम कुमारी विश्वकर्मा ने संयुक्त रूप से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

शोभायात्रा में दुर्गे मां इंटर कालेज, एसबीएस इंटर कालेज, लवकुश जूनियर हाईस्कूल, ग्रीर सक्सेज स्कूल, बाईके मिशन स्कूल के छात्र-छात्राओं ने देवी देवताओं की रूप सज्जा धारण कर लोगों को मनमोहित किया। शोभायात्रा में बैंड बाजों की धुन, घोड़ो का नृत्य तथा बहुरूपियों की कला देखते ही बन रही थी। शोभायात्रा में शामिल झांकियों का स्वागत कोंच स्टैंड पर कल्लू मंगौड़ी वाले, पीली कोठी, घंटाघर के आगे भागचंद प्रजापति, कोतवाली के सामने हिमांशु एक्सरे, दलगंजन चैराहा पर एएमआईएमआई के संगठन ने फूल बरसाकर तथा फल, जूस, नाश्ता देकर स्वागत किया।

शोभायात्रा करीब तीन बजे दोपहर के समय कालपी रोड स्थित विश्वकर्मा मंदिर पर पहुंची जहां विश्वकर्मा समाज सेवा समिति के पदाधिकारियों ने झांकियों का स्वागत कर महासभा के पदाधिकारियों का स्वागत माला पहनाकर किया। सभी स्कूली झांकियों को वरीयता के अनुसार महासभा द्वारा पुरस्कृत कर, उपहार एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। भगवान विश्वकर्मा पूजा दिवस पर मंदिर में उपस्थित जनसमूह व स्कूल के प्रबंधकों एवं प्रधानाचार्यो का जिलाध्यक्ष महेश विश्वकर्मा ने आभार व्यक्त किया।

इस मौके पर महासभा के संरक्षक अवध बिहारी, रामलाल विश्वकर्मा, एलआर विश्वकर्मा, राम लक्ष्मण शर्मा, नवीन विश्वकर्मा, सपा जिलाध्यक्ष वीरपाल यादव, कैलाश विश्वकर्मा, भोले, पप्पू रूरा, बादशाह विश्वकर्मा, रामशंकर ओझा, सेवा समिति श्याम बाबू विश्वकर्मा अध्यक्ष, श्यामबाबू विश्वकर्मा महामंत्री, मैकेनिक संघ से दीपक झा, हलीक भाई, युसूफ अंसारी, राकेश अग्रवाल, संतोष विश्वकर्मा, एएमआईएमआई अध्यक्ष आरिफ भाई, अजय निरंजन, चंद्रशेखर चैरसिया, रमेश दद्दू, प्रमोद झा, पुरूषोत्तम, गोविंद, नीलकमल, रामेश्वर जैसारी, जयनारायण ओझा, संजय कानपुर, धर्मेन्द्र हरदोई, ज्ञानेन्द्र सिंह, रामकुमार, भानु वर्मा, दीपू डकोर सहित सैकड़ो लोग शामिल रहे।

राउरकेला। टीसीआइ चौक स्थित विश्वकर्मा मंदिर में देवशिल्पी की पूजा विधिविधान से की गई। यजमान जितेंद्र विश्वकर्मा ने यज्ञाहुति एवं सर्व कल्याण की कामना की। इस अनुष्ठान में दिलीप शर्मा, जितेन्द्र शर्मा, अनूप विश्वकर्मा, रवीन्द्र शर्मा, सोहराइ शर्मा, अनिल शर्मा, अनिल विश्वकर्मा, सुरेन्द्र विश्वकर्मा, सुरेन्द्र शर्मा, कवीन्द्र शर्मा, उमेश कुमार, शक्ति शर्मा, शंकर विश्वकर्मा, रंजीत शर्मा संरक्षक, शिवनाथ शर्मा, मदन ठाकुर, सुग्रीव शर्मा, मुरलीधर शर्मा आदि सक्रिय रहे। इस मौके पर भजन संध्या का आयोजन भी हुआ जिसमें शिवनाथ राम ने रामचरित्र सुनाया।

विश्वकर्मा पूजा पर किया मेधावियों का सम्मान

झांसी। नगर में भगवान विश्वकर्मा की पूजा बड़ी धूमधाम से मनाई गई, इसके साथ ही मेधावी छात्रों को सम्मानित भी किया गया।

पांचाल समाज समिति के तत्वावधान में भगवंतपुरा में विश्वकर्मा पूजा मनाई गई। सर्वप्रथम विश्वकर्मा भगवान की आरती व पूजा-अर्चना की गई- उसके बाद जयंती में मेधावी छात्रों का सम्मान किया गया। जयंती में वरिष्ट नागरिकों का भी सम्मान किया गया। पांचाल समाज समिति के सभी सदस्यों ने एकजुट होकर समाज के प्रगति के लिये विश्वकर्मा भगवान से प्रार्थना की और तत्पश्चात भंडारे का आयोजन किया गया।

मंच का संचालन शिवलाल विश्वकर्मा ने किया। जानकी पांचाल ने आभार व्यक्त किया इस मौके पर मुन्ना लाल विश्वकर्मा, धीरज शर्मा, मनोज शर्मा,आकाश विश्वकर्मा, धर्मेंद्र शर्मा एडवोकेट, विकास शर्मा, हेमंत शर्मा, आदि लोग उपस्थित रहे।

अखिल भारतीय बढ़ई महासभा ने निकाली शोभायात्रा

लखनऊ। अखिल भारतीय बढ़ई महासभा द्वारा भगवान श्री विश्वकर्मा पूजा के शुभ अवसर पर बढ़ई जाति की सत्ता में हिस्सेदारी व राजनीतिक अधिकार के लिए इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान विभूति खंड गोमती नगर लखनऊ से संस्थापक राष्ट्रीय अध्यक्ष विश्राम शर्मा के नेतृत्व में भगवान विश्वकर्मा जी की विशाल शोभायात्रा निकाली गई।

इस यात्रा में सैकड़ो चार पहिया वाहन व दो पहिया वाहन पर महासभा के सदस्य सिर पर पीली पट्टी बांधकर भगवान विश्वकर्मा के नारे लगाते हुए ढोल-नगाड़ों के साथ संगीत की टोली के साथ क्रमबद्ध तरीके से इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान से निकलकर पालीटेक्निक चौराहा, लोहिया पथ, कालिदास मार्ग,

राज भवन चौराहा, विधानसभा, हजरतगंज चौराहा, निशातगंज, खुर्रम नगर, मुंशीपुलिया, पॉलिटेक्निक चौराहा होते हुए इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान पर समापन हुई। इस यात्रा के दौरान सभी चौराहों पर समाज के लोगों ने भगवान विश्वकर्मा की पूजा की व महासभा के लोगों का माला पहनाकर स्वागत किया।

इस अवसर पर महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष विश्राम शर्मा, संरक्षक ईश्वरदीन शर्मा, राष्ट्रीय संयोजक रमापति विश्वकर्मा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष राजेन्द्र शर्मा सहित सभी पदाधिकारीगण उपस्थित रहे।

बीकानेर में विश्वकर्मा पूजा पर प्रतिभाओं का सम्मान

बीकानेर। पूरे देश-दुनिया की भांति बीकानेर में भी विश्वकर्मा पूजा दिवस मुख्य विश्वकर्मा मंदिर लक्ष्मीनाथ जी चौक में मनाया गया। विशिष्ट पूजा-हवन के बाद प्रसाद वितरण किया गया। विश्वकर्मा पूजा दिवस की पूर्व संध्या पर श्री विश्वकर्मा पूजा दिवस पखवाड़े के अंतर्गत श्री बीकानेर विश्वकर्मा संघ संस्था द्वारा आयोजित प्रतिभा सम्मान सहारोह कार्यक्रम माहेश्वरी भवन में रखा गया। कार्यक्रम संयोजक शिव कुमार बामणिया और अध्यक्ष चतुर्भुज नागल ने बताया कि समारोह के मुख्य अतिथि केसरीचंद कुलरिया, विशिष्ट अतिथि पन्नालाल नागल व केवलचंद आसदेव थे।

मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों के साथ राजनैतिक क्षेत्र की प्रतिभाओं में वीरेन्द्र करल, विनोद कुलरिया, पवन कुमार, योगेश बरड़वा, भंवरलाल नागल, नारायण प्रसाद बरड़वा, ओम प्रकाश, पूर्व सरपंच राधाकिशन नागल, बाबूलाल बरड़वा, गोपाल माकड़, डॉ0 ओम लेखराव, विमल के साथ-साथ समाज की लगभग 300 प्रतिभाओं (छात्र-छात्राओं और खिलाड़ियों) को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। खेल के क्षेत्र में स्थान प्राप्त करने वाले सामान्य ज्ञान व चित्रकला प्रतियोगिता में प्रथम वर्ग कक्षा 3 से 5 में दिनेश माकड़ ने, द्वितीय वर्ग कक्षा 6 से 8 में दीनदयाल मांडण व अर्पित कुलरिया ने, तृतीय वर्ग कक्षा 9 से 12 में निर्मल मांडण व पवन मांडण ने, सीनियर वर्ग में कीर्ति नागल व विजय भद्रेचा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

सत्र 2016 -17 में कक्षा 3 में वृन्दा धामु, कक्षा 4 में राधिका माकड़, कक्षा 5 में गुंजन बरड़वा, कक्षा 6 मे नीतु कुलरिया, कक्षा 7 में शुभम नागल, कक्षा 8 में गोविंद गैपाल, कक्षा 9 में दिव्यांशु मांडण, कक्षा 10 में संजय गैपाल, कक्षा 11 कला में राजू कुलरिया, वाणिज्य में प्रिया नागल, विज्ञान में कौशल भद्रेचा, कक्षा 12 कला में मोनिका कुलरिया, विज्ञान में भरत लदरेचा, वाणिज्य में योगेश दुर्गेश्वर ने पहला स्थान प्राप्त किया। बीए में जसराज माकड़, बीकॉम में रेखा मांडण, बीसी में कीर्ति, एमएससी में चित्रा आसदेव, एमए में कीर्ति नागल, एम फिल में निकिता भद्रेचा, एल एल बी में आशीष बुढ़ड़ ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

राजेन्द्र माकड़ ने गणतंत्र दिवस में मार्च कैडेट दल में भाग लिया, गोविंद मोटियार स्टेट लेवल क्रिकेट में चयनित हुआ, डॉ0 गजानंद नागल ने एग्रीकल्चर यूनिवरर्सिटी में राजस्थान टॉप किया, इन सभी को सम्मानित किया गया। इसके अलावा द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों और अन्य बच्चों को सांत्वना पुरस्कार प्रदान किये गये।

प्रतिभाओं को संस्थान अध्यक्ष चतुर्भुज नागल, मंत्री परमेश्वर चोयल, कोषाध्यक्ष शिव कुमार बामणिया के साथ-साथ विश्वकर्मा मंच के संयोजक पन्नालाल नागल, रत्नावली ग्रुप के वित्त एवं लेखा प्रबंधक केसरीचंद कुलरिया, अंतर्राष्ट्रीय कबड्डी कोच केवलचंद आसदेव, कन्हैयालाल नागल, शिवजी कलाकार, बद्रीजी माकड़, मूलचंद गोपाल ने स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया।

कार्यक्रम आयोजन में गणेश नागल, गोपाल, गोविंद मांडण, दीपू मांडण, ध्यानचंद, अशोक, झंवर नागल, राजू माकड़, आशाराम बुढ़ड़, विष्णु, मघाराम, महेश, राजेन्द्र कुलरिया, रामकृष्ण, रामलाल आदि कार्यकर्ताओं का विशेष सहयोग रहा।

गत दिनों सोनगिरी कुआं क्षेत्र में पटाखों के गोदाम में हुए विस्फोट से ध्वस्त मकानों के पुनर्निर्माण में दरवाजे-खिड़कियां सहित डेढ़ लाख रुपये का योगदान करने वाले सुथार समाज के युवाओं विनोद कुलरिया, पवन माकड़, बाबूलाल बरड़वा को इस सामाजिक सरोकार के लिए भी सम्मानित किया गया।

अच्छाइयों पर ना करें घमण्ड

प्रस्तुति- पुजारी शर्मा

हंसों का एक झुण्ड समुद्र तट के ऊपर से गुजर रहा था, उसी जगह एक कौवा भी मौज-मस्ती कर रहा था। घमण्डी कौवा हंसों को उपेक्षा भरी नजरों से देखा और बोला- तुम लोग कितनी अच्छी उड़ान भर लेते हो? कौवा मजाक के लहजे में बोला, तुम लोग और कर ही क्या सकते हो बस अपना पंख फड़फड़ा कर उड़ान भर सकते हो, क्या तुम मेरी तरह फुर्ती से उड़ सकते हो? मेरी तरह हवा में कलाबाजियां दिखा सकते हो? नहीं, तुम तो ठीक से जानते भी नहीं कि उड़ना किसे कहते हैं?

कौवे की बात सुनकर एक वृद्ध हंस बोला, ये अच्छी बात है कि तुम ये सब कर लेते हो, लेकिन तुम्हे इस बात पर घमण्ड नहीं करना चाहिए।

मैं घमण्ड-वमण्ड नहीं जानता, अगर तुममें से कोई भी मेरा मुकाबला कर सकता है तो सामने आये और मुझे हरा कर दिखाए। एक युवा नर हंस ने कौवे की चुनौती स्वीकार कर ली। यह तय हुआ कि प्रतियोगिता दो चरणों में होगी, पहले चरण में कौवा अपने करतब दिखायेगा और हंस को भी वही करके दिखाना होगा और दूसरे चरण में कौवे को हंस के करतब दोहराने होंगे।

प्रतियोगिता शुरू हुई, पहले चरण की शुरूआत कौवे ने की और एक से बढ़कर एक कलाबाजियां दिखाने लगा, वह कभी गोल-गोल चक्कर खाता तो कभी जमीन छूते हुए ऊपर उड़ जाता। वहीं हंस उसके मुकाबले कुछ खास नहीं कर पाया। कौवा अब और भी बढ़-चढ़ कर बोलने लगा, मैं तो पहले ही कह रहा था कि तुम लोगों को और कुछ भी नहीं आता 'ही ही ही'

फिर दूसरा चरण शुरू हुआ, हंस ने उड़ान भरी और समुद्र की तरफ उड़ने लगा। कौवा भी उसके पीछे हो लिया, ये कौन सा कमाल दिखा रहे हो, भला सीधे-सीधे उड़ना भी कोई चुनौती है? सच में तुम मूर्ख हो, कौवा बोला। पर हंस ने कोई जवाब नहीं दिया और चुप-चाप उड़ता रहा, धीरे-धीरे वे जमीन से बहुत दूर होते गये और कौवे का बड़बड़ाना भी कम होता गया, और कुछ देर में बिल्कुल ही बंद हो गया।

कौवा अब बुरी तरह थक चुका था, इतना कि अब उसके लिए खुद को हवा में रखना भी मुश्किल हो रहा था और वो बार-बार पानी के करीब पहुंच जा रहा था। हंस कौवे की स्थिति समझ रहा था, पर उसने अनजान बनते हुए कहा, तुम बार-बार पानी क्यों छू रहे हो, क्या ये भी तुम्हारा कोई करतब है? नहीं, कौवा बोला। मुझे माफ कर दो, मैं अब बिल्कुल थक चुका हूं और यदि तुमने मेरी मदद नहीं की तो मैं यहीं दम तोड़ दूंगा। मुझे बचा लो, मैं कभी घमण्ड नहीं दिखाऊंगा। हंस को कौवे पर दया आ गयी, उसने सोचा कि चलो कौवा सबक तो सीख ही चुका है, अब उसकी जान बचाना ही ठीक होगा, और वह कौवे को अपने पीठ पर बैठाकर वापस तट की ओर उड़ चला।

इस बात को समझना चाहिए कि भले हमें पता ना हो पर हर किसी में कुछ न कुछ खूबी होती है जो उसे विशेष बनाती है। और भले ही हमारे अन्दर हजारों अच्छाईयां हों, पर यदि हम उस पर घमण्ड करते हैं तो देर-सबेर हमें भी कौवे की तरह शर्मिन्दा होना पड़ सकता है।

गामा विश्वकर्मा
09919066415

विजय विश्वकर्मा
09838854774

श्याम विश्वकर्मा
09822671888

विश्वकर्मा किरण साप्ताहिक समाचार पत्र को और सभी देशवाशियों को श्री विश्वकर्मा पूजा की हार्दिक शुभकामनायें.

हरी ॐ प्लाई, ग्लास & हार्डवेयर
मछली शहर रोडवेज के पास, मछली शहर, जौनपुर

विजय एल्युमीनियम & पैनल
वडाला रोड, नाशिक, महाराष्ट्र

17 सितम्बर विश्वकर्मा पूजा के अवसर पर महाराष्ट्र के वेरूल में निकाले गये जुलूस में 'विश्वकर्मा महिला ढोल पथक' में सम्मिलित महिलायें। इन ढोल पथक महिलाओं ने अपनी उम्दा कला का प्रदर्शन किया।

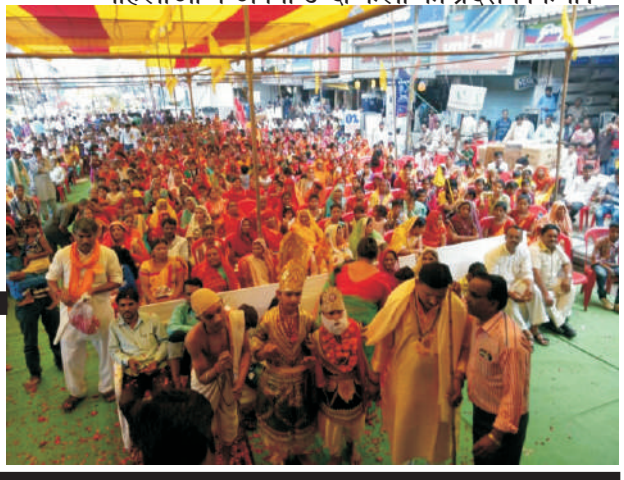

17 सितम्बर विश्वकर्मा पूजा के अवसर पर भागीदारी के रूप में महिलाओं का अपार जन सैलाब देखकर ऐसा महसूस हुआ कि अब विश्वकर्मा समाज की महिलाएं भी सामाजिक विकास मे कंधे से कंधा मिलाकर चलना चाहती हैं।

-उमा विश्वकर्मा

विश्वकर्मा समाज के समाचारों की एकमात्र साप्ताहिक पत्रिका

विश्वकर्मा किरण

(हिन्दी साप्ताहिक)

पाठकों एवं शुभचिन्तकों से अनुरोध

प्रिय बन्धुओं, सादर विश्वकर्माभिवादन !

आप सभी जानते हैं कि ''विश्वकर्मा किरण'' हिन्दी साप्ताहिक पत्रिका पिछले 18 वर्ष से समाज के अधिकांश समाचारों, विचारों और लेखों के साथ आप सभी के बीच एक पहचान बना चुका है। पत्रिका ने समाज के हर छोटे-बड़े समाचारों, लेखकों के विचार, समाज के कवियों और साहित्यकारों को तवज्जो दिया है। अधिकांश पाठक और शुभचिन्तक यह अच्छी तरह जानते हैं कि समाचारपत्र अथवा पत्रिका का प्रकाशन कार्य बहुत ही कठिन है। प्रकाशन में बहुत खर्च आता है जिसका संकलन बहुत ही कठिनाई से हो पाता है, इन्हीं परिस्थितियों में कभी-कभार प्रकाशन बाधित भी हो जाता है। प्रकाशन बिना आप सभी के सहयोग के नहीं चल सकता। आप सभी से अनुरोध है कि सदस्यता के अलावा भी समय-समय पर यथासम्भव पत्रिका का आर्थिक सहयोग करते रहें जिससे प्रकाशन निर्बाध रूप से चलता रहे।

सहयोग राशि इस खाते में जमा करें-

Account Name	:	VISHWAKARMA KIRAN
Account No.	:	4504002100003269
Bank Name	:	PUNJAB NATIONAL BANK
Branch	:	SHAHGANJ, JAUNPUR (U.P.)
IFSC Code	:	PUNB0450400

मो0: 09920996281

विश्वकर्मा पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं

दिनेश भाई शर्मा कार्यकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष

अखिल भारतीय विश्वकर्मा महासभा

फर्म- श्री सतगुरू डिसिंग वर्क्स, नवी मुम्बई

फर्म- श्री सतगुरू हार्डवेयर स्टोर, घाटकोपर (प0) मुम्बई

आवासः बी-1202, प्रेसिडेन्टियल टावर, एल0बी0एस0 मार्ग, घाटकोपर (प0) मुम्बई-400086

मो0: 09820438526

विश्वकर्मा पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं

अनिल एस0 विश्वकर्मा

पत्रकार एवं वरिष्ठ समाजसेवी

महासचिव : विश्वकर्मा विकास मंच कार्यकारी अध्यक्ष : श्री विश्वकर्मा विकास समिति

फर्म : वैष्णवी इन्टीरियर्स website: vaishnaviinterior.com

E-mail: anil.svishwakarma@yahoo.in, vaishnaviinterior75@gmail.com

आवासः शिव प्रगति सोसाइटी, अकुर्ली रोड, हनुमान नगर, कांदीवली (ई0) मुम्बई-400101

प्रो0 दिनेश कुमार शर्मा

मो0: 9415436613
7618914000

मंजू आटो सेल्स एण्ड सर्विस

♦फाइनेंस सुविधा उपलब्ध ♦एक्सचेंज आफर

HONDA

विश्वकर्मा पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं

होण्डा एजेंसी अधिकृत विक्रेता

होण्डा बाइक साइन, नियो, ड्रीम युगा, सी0डी0 110, ट्रिगर, युनिकार्न, एक्टिवा आदि के प्रमुख विक्रेता

होण्डा एजेंसी:- निकट न्यू एमेटी कैम्पस, मल्हौर-लौलाई रोड, चिनहट, लखनऊ

विश्वकर्मा पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं

सोचन राम विश्वकर्मा
जिला अध्यक्ष
अखिल भारतीय
विश्वकर्मा शिल्पकार महासभा
जनपद- जौनपुर
मो0: 09935557203

विश्वकर्मा पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं

राजेश विश्वकर्मा
युवा प्रदेश अध्यक्ष
अ0भा0 विश्वकर्मा शिल्पकार महासभा
मो0: 09415660042

विश्वकर्मा पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं

शिवकुमार विश्वकर्मा
युवा जिला अध्यक्ष
अ0भा0 विश्वकर्मा शिल्पकार महासभा
जनपद- जौनपुर
मो0: 09919267196

विश्वकर्मा पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं

डा0 जगदीश विश्वकर्मा
जिला महासचिव
अखिल भारतीय
विश्वकर्मा शिल्पकार महासभा
जनपद- जौनपुर
मो0: 09415653489

विश्वकर्मा पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं

डा0 आर0पी0 विश्वकर्मा
चिकित्सा अधिकारी
सामु0 स्वास्थ्य केन्द्र, मछलीशहर, जौनपुर
मो0: 09415291401

विश्वकर्मा पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं

राजेश विश्वकर्मा
जिला अध्यक्ष
विश्वकर्मा चैरिटेबल ट्रस्ट (रेड ब्रिगेड)
जनपद- जौनपुर
मो0: 09616498460

विश्वकर्मा पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं

राम विलाश विश्वकर्मा

उप मण्डलीय अभियन्ता, दूरसंचार
जनपद- लखनऊ

आवासीय पता:
8-सी/530, वृन्दावन योजना-2
रायबरेली रोड, लखनऊ
फोनः 0522-2440110
मो0: 09415055077

विश्वकर्मा पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं

अरविन्द कुमार विश्वकर्मा

क्षेत्रीय विपणन अधिकारी (खाद्य)
जनपद- अमेठी
मो0: 09415065203

विश्वकर्मा पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं

दान किशोर विश्वकर्मा

संस्थापक-
श्री विश्वकर्मा सेवा समिति
एच0ए0एल0, इन्दिरानगर, लखनऊ
539-ख/595, बड़ी जुगौली, गोमतीनगर, लखनऊ
मो0: 09453841197, 09839328908

विश्वकर्मा पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं

डा0 अनिल कुमार विश्वकर्मा

(सम्पादक- वाग्प्रवाह)
वरिष्ठ सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
ज0ने0मे0स्ना0 महाविद्यालय, बाराबंकी
मो0: 09412881229

विश्वकर्मा पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं

सुशील कुमार शर्मा

एडवोकेट, सिविल कोर्ट, लखनऊ
पता- 538क/1624ए, त्रिवेणीनगर-3, लखनऊ
मो0: 09839647199

विश्वकर्मा पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं

राम नरेश शर्मा

प्रोप्राइटर

सफेदा स्टील

25ए, तालकटोरा रोड, लखनऊ
मो0: 09450647190, 09554655578

विश्वकर्मा पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं

डा0 कृष्णमुरारी विश्वकर्मा

पूर्व मन्त्री एवं वरिष्ठ भाजपा नेता

मो0: 09415207895

अजय विश्वकर्मा

युवा समाजसेवी

जनपद- अमेठी

मो0: 08005190361

विश्वकर्मा पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं

राम दुलार विश्वकर्मा

(सेवानिवृत्त पुलिस उपाधीक्षक)

वरिष्ठ समाजसेवी

ओम प्रकाश विश्वकर्मा

(इनवाइरो इन्फ्रा डेवलपर्स प्रा0लि0)

निवास-

ग्राम-नरायनपुर

पोस्ट-रामपुर सकरबारी

जनपद-अम्बेडकर नगर

मो0: 08009090243

विश्वकर्मा पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं

सी0पी0 शर्मा

सेवानिवृत्त इन्सपेक्टर (उ0प्र0 पुलिस)

निवास- निकट पावर हाउस, कमता, लखनऊ

मो0: 09450303174

विश्वकर्मा पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं

राजेश विश्वकर्मा

एडवोकेट, सिविल कोर्ट, लखनऊ

पता- 538क/137, त्रिवेणीनगर-1, लखनऊ

मो0: 09305813312, 07232951914

विश्वकर्मा पूजा की हार्दिक शुभकामनाएं

दीपक विश्वकर्मा

पत्रकार

ग्राम-बड़उर, पोस्ट-जपटापुर, जौनपुर

मो0: 09616205688

ओ३म श्री विश्वकर्मा जी महाविद्यालय

प्रकाश विहार, वारनपुर, कहिंजरी, कानपुर देहात

(चौबेपुर से बेला मार्ग पर स्थित)

डा0 ओ0पी0 विश्वकर्मा
प्रबन्धक
मो0: 9415483052

♦कला संकाय♦विज्ञान संकाय♦बी0टी0सी0 प्रयासरत♦

Website: www.ovsm.org E-mail: info@ovsm.org सम्पर्क सूत्र: 9935274607, 9415483052

विगत 33 वर्षों से आपकी सेवा में सदैव तत्पर

प्रकाश नर्सिंग होम

-:सुविधाएं:-

आकस्मिक सेवाएं 24 घण्टा उपलब्ध
चौबेपुर रेलवे स्टेशन के नजदीक
खुले वातावरण में स्थापित
एम्बुलेंस, मेडिकल स्टोर, एक्स-रे
पैथोलाजी, आक्सीजन एवं सभी प्रकार के
आपरेशन की सुविधा उपलब्ध

पता-
प्रकाश नगर, जी0टी0 रोड
चौबेपुर, कानपुर नगर

TM VEW Vishwakarma Engineering Works
ALL KIND OF NEW MACHINERY
TEXTILE MACHINES &
ALL VALUE ADDED FABRIC MACHINES MANUFACTURER
BSCIC NABCB ISO 9001 REGISTERED

Vijay R. Mistry
Mob.-9825154496

VISHWAKARMA ENGINEERING WORKS

Shearing Machine

Warr Center Cutting Machin

Warp Butta Cutting Machine

Roll Press Machine

Calendar Machine
& Bags Polish

Five Roll Calendar
& Iron Press Mac

-Office Address-

Plot No.64, Vinayak Chambers, Jawahar Road, Road No.– 4, Udhna Udhyog Nagar, Surat–394210 (Gujarat)
Factory-Plot No.B/1,73-74,Bhagwati Ind. Estate, Nr Navin Flourine Colony, Bhestan, Surat.
PHONE NO. : +91-261-2274380, CELL : +91-9825154496,
e-mail address : vijayr.mistry@yahoo.com website : http://vishwakarmaengineering.com
http://www.vishwakarmaengineeringwork.in/ http://www.vishwakarmaengineeringwork.com/
https://www.youtube.com/channel/UCdpT7D2K_DHwXGYnZ-Qo_Iw